होड़

साकेत

कुछ बातें

हरेक मिलने वाले इंसान की अपनी एक ख़ास गंध होती है । और दोस्तों से आने वाली सुगंध का अपना एक ख़ास रंग । ये रंग कैसे और कितना जीवन में घुला है - यही हर इंसान से आने वाली गंध बताती है । मेरे जीवन के कुछ ख़ास रंग हैं -

रोहन की मासूमियत भरे अभिनय का रंग है - हरा
पिंका के दिल में भरे ढेर सारे प्रेम का रंग है - गुलाबी
दयाल के चुलबुले बहते साफ मन का रंग है - बैंगनी
रोहित की निष्ठा का रंग है - केसरिया
अपर्णा के बच्चों सी शरारत का सफेद रंग और शैतानी हरकतों का काला रंग मिला दें तो कहीं बीच का रंग है - धूसर
शिवम के बड़बोले अल्हड़पन का रंग है - पीला
विमल के कटाक्ष का रंग है - नीला
अनमोल के भोलेपन का रंग है - भूरा
सोनल के पागलपन का रंग है - सुनहरा
और अब सब मिला दें तो ये रंग है - लाल

इस कहानी में पेड़ का लाल रंग मेरे अब तक के सफ़र में मिले मित्रों को समर्पित है । कहानी में जो नाम आप पढ़ेंगे -

गोपाल (गोपू) , अंकितेश, उत्कर्ष (उतकु), आविष्कार, अमित, नवीन (सोनू) , अनुराग , मुस्कान , रोहन , प्रियंका (पिंका) , सलोनी (दयालु) , रोहित , अपर्णा (दर्शी) , शिवम, विमल (विमली) , अनमोल , सोनल , मीता , एहतेशाम (मिर्ज़ा) , अविराज , विशाल (वीसी) , सृष्टि रंजन (प्रिंसी) और सृष्टि (चिंकी)

इस कहानी में कुछ फिल्मी गाने , कहानी के किरदारों ने गाये हैं । आदर सहित गीतकारों को आभार -

मुझे जान ना कहो मेरी जान (गुलज़ार/कानु रॉय)
आने वाला पल (आनंद राज आनंद)
मेरा कुछ सामान (गुलज़ार/राहुल देव बर्मन)
मेरी दोस्ती मेरा प्यार (लक्ष्मीकांत प्यारेलाल/मजरूह सुल्तानपुरी)
किसी नज़र को तेरा (बप्पी लहिरी)
ज़िन्दगी क्या हैं इक लतीफ़ा हैं (आनंद बक्शी)
दिए जलते हैं, फूल खिलते हैं (आनंद बक्शी)
वक़्त ने किया क्या हंसीं सितम (कैफ़ी आज़मी/एस०डी० बर्मन)

'हेलो...हेलो , आवाज़ आ रही है ?'

'हाँ, अब आ रही है । कहाँ हो तुम ? कब से ट्राय कर रहे थे '

'हम नालंदा मेडिकल कॉलेज के एकलौते लाइब्रेरी के पास वाली कैंटीन के सामने खड़े होकर चाय पी रहे है । तुम बताओ , क्या हाल चाल ! इतना सुस्त काहे साउंड कर रही हो ? '

'कुछो बोलोगी भी !'

'..ये बताओ हम कौन है तुम्हारे लिए ? '

'..अच्छा तो ये पूछने के लिए फ़ोन किया गया है । तुम....तुम न ख़ाली डब्बा हो हमारे लिए '

'....भक्क ! थोड़ा एक्सप्लेन करोगे '

'..कैसे बताए ! अच्छा तो ऐसा है कि कुछ लोग आपके जीवन में ख़ाली डब्बे की तरह होते हैं । वो ख़ाली डब्बे जिन्होंने आपको बचपन से देखा है, जिनमें कभी आपने लूडो के रंग डाले थे, तो कभी हजमोले की गोलियां, या वो चॉकलेट जिसे अपने भाई से छिपाना था और फिर बड़े होने पर उसमें लाल गुलाब भी रखा, कभी वो डायरी भी जिनमें प्यार के अफ़साने लिखे हुए थे। इन डिब्बों की ख़ास बात ये होती है कि इनमें चॉकलेट से लेकर गुलाब तक सब हमेशा के लिए संजोया होता है और फिर भी ये ख़ाली होते हैं । इनमें आप कुछ डालने से पहले सही गलत की फ़िक्र नहीं करते और हाँ आप संवेदनशील बने रह सकते हैं। आपको जज नहीं किया जाएगा... बस इतना ही !'

'तुम तो सेंटी कर दिए हमको । अच्छा ये बताओ लोग प्यार को इतना कंप्लीकेट क्यों कर देते हैं ?'

'क्योंकि उन्होंने अच्छी कहानियां नहीं सुनी होती !'

'हमको सुनाओगे ?'

'कैसी कहानी सुननी है तुमको '

'ऐसी जिसमें मेडिकल कॉलेज जैसी होड़ हो, दोस्ती हो, जादू हो, जंगल हो, प्यार हो , झील हो, पेड़ हो, ढिशूम ढिशूम वाली फ़िल्मी एक्शन हो, जिंदगी-मौत हो, पाखंड हो, भगवान हो और अंत में उम्मीद हो... और हाँ उसमें सारे किरदार पंछी हो '

'मैडम,और कुछ.. अच्छा हम कुछ सोचते हैं , एक दो दिन में कोलकाता आकर सुनाते हैं । ये बताओ तुम्हारे कॉलेज कैसे कोई पहुँच सकता है '

'सियालदह स्टेशन पहुँच कर किसी से भी एन.आर.एस मेडिकल कॉलेज का पता पूछ लेना, चलते चलते पहुँच जाओगे । वैसे सच्ची आ रहे क्या ?'

'देखते हैं । पहुँच गए तो कॉल करेंगे...'

होड़

एक घना जंगल था। उसमें बहुत सारे हरे भरे पेड़ों के साथ जंगल के दूसरे छोर पर एक लाल पेड़ था । जंगल की सारी चिड़िया उस लाल पेड़ पर जाना चाहती थीं । कहते हैं कि उस लाल पेड़ पर जो पहुँच गया उसको आगे फिर कभी कोई शिकारी पकड़ नहीं सकता । उस लाल पेड़ पर सबसे अच्छे घोसले बनाना सीखाते थे, उड़ने के नए करतब भी सीखाते थे

और कुछ बूढी चिड़िया कहती हैं कि जो उस लाल पेड़ पर चला गया उसका जीवन तो सफल हो गया ।

जंगल की सबसे समझदार पंछी , चिंकी उल्लू का कहना था कि लाल पेड़ सिर्फ शिक्षण संस्थान नहीं है , जंगल का होना भी उसपर निर्भर करता है । अब ये बात सच हो न हो लेकिन वहाँ जाना तो सभी चाहते थे । वहाँ जाना पर आसान काम तो था नहीं , हर साल न जाने कितनी पंछियां जाने की कोशिश करती, पर सफल नहीं हो पाती थी । इसी जंगल में एक सोनू तोता रहता था । उसको लाल पेड़ में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी । उसको जंगल के बारे में सब पता था और अब उसको जंगल के बाहर की दुनिया के बारे में जानना था । मीता झील के पास ही एक साकेत नाम का बरगद का पेड़ था और सोनू तोता उसी पेड़ पर अपने माँ-पापा के साथ रहता था ।

लाल पेड़ पर जाने की कोशिश तो करो तुम , ऐसा सोनू के पापा रोज सोनू से कहते थे और वो रोज बहाना बनाता फिर रोज मार खाता था । झील से दूर , पिंका नाम के आम के पेड़ के ऊपर नीलू मैना रहती थी । और नीलू मैना के जीवन का एक ही लक्ष्य था और वो ये था कि उसको किसी भी तरह लाल पेड़ पर जाना था । जंगल के बीचों बीच एक दर्शी नाम का दलदल था और यहाँ रोनी मोर रहता था । उसके बड़े होते ही उसके माँ पापा ने उसको घर से बाहर निकाल दिया था । उसके जीवन में फिलहाल तीन ही काम थे - एक दूसरों से मांग कर कुछ खाने का इंतेज़ाम कर लेना, दूसरा जितना हो सके सो जाना और तीसरा दर्शी दलदल को गाली देना । उसको जब से पता चला था कि लाल पेड़ पर खाने और आराम की व्यवस्था है, तब से वो भी वहां जाना चाहता था। दलदल के आसपास विमली नाम का शिकारी आया करता था जिससे रोनी मोर को बहुत डर लगता था इसीलिए वो उससे भी पीछा छुड़वाना चाहता था ।

लाल पेड़ जाने के लिए बहुत सारे पेड़ों की जानकारी, जंगल की जानकारी, शिकारी के आवाज़ की परख, उड़ने में निपुणता और भी बहुत सारी खूबियां होनी चाहिए थी । इन तीनों ने लाल पेड़ के सारे परीक्षाओं में सफलता हासिल कर लाल पेड़ पर एक साथ पहुँच गए । इस होड़ में सोनू तोता को ज़बरदस्ती उसके पापा ने भेज दिया था । रोनी मोर की आवाज़ पहचाने की कला ने उसका स्थान पक्का किया था । और नीलू मैना ने तो परीक्षा में पहला स्थान लाया था ।

तीनों को एक ही महीने में पता चल गया था कि ये लाल पेड़ उतनी भी अच्छी जगह नहीं जितनी की जंगल में सारी पंछियों ने हल्ला मचा के रखा हुआ था ।

यहाँ भी तो रोज काम सीखाने के बहाने सुबह सुबह उठा देते थे । तीनों का दिल तो तब टूटा जब उन्हें पता चला कि यहाँ के सारे काम जो जल्दी और अच्छे से सीख लेगा वो नीले पेड़ पर जा सकता था । और वो यहाँ से ज्यादा अच्छी जगह है, ऐसा सभी लाल पेड़ पर पुराने रहने वाले यही कहते थे । मतलब ये प्रतिस्पर्धा तो अभी शुरू ही हुई है ।

जन्म के बाद से ही सब कुछ न कुछ खेलना शुरू कर देते हैं । सबसे पहले किसी ने कोई खेल खेला होगा तो वो है अंगूठा चूसना । और फिर लुका-छिपी, आँख मिचौली, रुमाल चोर जैसे खेलों से होते हुए कबड्डी , क्रिकेट और फुटबॉल खेलने लगते हैं । शुरुआत के खेलों में कोई जीतता नहीं है और फिर प्रतिस्पर्धा बढ़ती जाती है । फिर ये होड़ निकल कर कब जीवन के हर हिस्से का हिस्सा बन जाता है पता ही नहीं चलता । कभी कभी जीवन के कुछ मोड़ पर कुछ वक़्त के लिए अँगूठा चूस लेना चाहिए ।

नीलू फिर से मेहनत करने में लग गयी । अब उसको एक नया लक्ष्य जो मिल गया था ।
रोनी मोर ने तो ठान ली थी कि अब वो यहाँ से कहीं नहीं जाने वाला और यहीं आराम करेगा । रोनी तो बस इतने से खुश था कि उसको न तो अब विमली शिकारी का डर था और न उसको दर्शी दलदल को रोज देखना पड़ता था ।
सोनू तोता रोज भागने की तरकीबों को सोचता और फिर उसने सोच रखा था कि जिस दिन लाल पेड़ पर शिकारी से बचने की कला सीख जाएगा उस दिन भाग जाएगा । नीलू मैना ने जीवन में कभी खेल-कूद, हँसी-मज़ाक, नाचना-गाना नहीं किया था ,इसी लाल पेड़ पर आने के चक्कर में । उसने सोचा था कि लाल पेड़ पर जाकर सब कर लेगी, लेकिन अब तो उसको नीले पेड़ का डर दिखा दिया गया था । और वो घर को याद करके कभी कभी रोने भी लगती थी ।

लाल पेड़ का नीचे वाला हिस्सा जो दयालु झरने के करीब था वहाँ जाना लाल पेड़ के नियमों के खिलाफ था ।
लेकिन नीलू मैना वहीं जाया करती थी ,जब भी कभी अकेले में उसे रोने का दिल करता था । रोनी मोर को जिस रात बहुत गर्मी लगती थी वो भी उसी जगह जा कर सोता था । दयालु झरने के कारण पेड़ के इस हिस्से में बेहद ठंडी हवा चलती थी ।
सोनू तोता को लगता था कि दयालु झरने के उस पार जंगल के बाहर की दुनिया है । वो भी अपने सपने को दूर से निहारने के लिए कभी कभार पेड़ के उस हिस्से पर जाया करता था।

एक दिन तीनों एक ही वक़्त, उसी हिस्से पर पहुँच गए । क्योंकि वहाँ जाना मना था तो तीनो चोरी-छिपे ही आये थे । तीनों दो नए को वहाँ देख कर हड़बड़ा गए थे । नीलू पहले से बैठ के रो रही थी और जैसे ही इन दोनों को देखा आँसू पोछ के सामने आ गयी।

सोनू ने हसते हुए नीलू से बोला , "इतना ही रोना था तो यहाँ क्यों आयी ?"

नीलू ने पहले तो अनसुना करने की कोशिश की फिर चिढ़ते हुए बोली, "तुमसे मतलब ?

रोनी मोर बस दोनों को देख रहा था। उसे फ़िक्र थी कि दोनों के चक्कर में कहीं सोने की जगह न छीन जाए और सबको इस जगह का पता न चल जाए ।

रोनी ने नीलू को ध्यान से देखा तो वो देखता ही रह गया । उसने इतनी सुंदर चिड़िया कभी नहीं देखी थी । लेकिन फिर सोचने लगा कि इतनी सुंदर चिड़िया तो मेरे जैसे खराब दिखने वाले मोर से बात भी नहीं करेगी । सोने की जगह बचाना ज्यादा अहम है ।

इसीलिए उन दोनों को एक बार बोला, "धीरे धीरे लड़ाई करो यार। नहीं तो पकड़े जाएंगे ।"

वो दोनों अब इसके पास आये और बोलने लगे , " अब तुमको क्या चाहिए ? "

"देख भाई ! हमको घर पर भी सोना ही था और यहाँ भी । देखो ये जगह किसी भी कीमत पर जानी नहीं चाहिए। बेहतर होगा कि हम तीनों दोस्ती कर लें ।"

नीलू मैना नहीं चाहती नहीं थी कि सोनू तोता से दोस्ती करे ।

उसको मन नहीं था कि सोनू जैसे बदमाश तोते से मुँह भी लगाए । धीरे धीरे बुदबुदाने लगी , "समझता क्या है अपने आप को ! पता नहीं तोता कैसे बन गया । इसको तो गधा होना चाहिए था । "

इसी बीच रोनी मोर ने उबासी लेते हुए कहा, "देखो बहन !"

फिर थोड़ा रुक कर नीलू से बोला , "बहन नहीं ! मतलब तुम जो भी हो, समझने की कोशिश करो । जगह तो तुम्हे भी पसंद है । है न ?"

नीलू ने हाँ में सर हिलाया तो रोनी बोला, " तो झेल लो थोड़ा सा इसको भी ! सह लो । "

रोनी मोर की आवाज़ बहुत प्यारी थी। नीलू को अच्छा लगा तो उसने रोनी से कहा, "सुनो तुम ! तुम्हारी वजह से मान रही हूँ । नहीं तो इस गधे की तरफ तो मैं देखती भी नहीं । "

सोनू तोता बोला , "देखो ! हम गधा नहीं , तोता हैं । पता नहीं कैसे कैसे लोग आजकल लाल पेड़ पर आ जाते हैं ।"

दोनों में फिर झगड़ा शुरू हो गया ।

रोनी मोर अब रोते और पैर पटकते हुए बोला ,"हमको कुछ नहीं पता । अगर हमारे सोने की जगह को कुछ हुआ न तो हम दोनों को दयालु झरने में फेक देंगे । "

फिर रोनी ने थोड़ा शांत होते हुए सोनू से पूछा ," और भाई , तुम बताओ ? तुम्हे यहाँ क्या काम है ? "

सोनू तोता ने अकड़ते हुए बोला, "वो हम तुम दोनोंं को नहीं बता सकते ।"

नीलू ने सुनते ही मुँह घुमाया और बोली, "हूह ! गधा"

रोनी ने सोनू से पूछा , "क्यों नहीं बता सकते ?"

सोनू बोला , "एक तो तुम दोनों बेवकूफ हो, समझ ही नहीं पाओगे और दूसरा ये कि हमको तुम दोनों पर यकीन नहीं है "

नीलू अब गुस्से में बोली, "बस बहुत हुआ, ये गधा यहाँ नहीं आएगा बस !"

फिर रोनी की तरफ देखते हुए बोली , " तुम बताओ ? तुम किसकी तरफ हो ?"

रोनी धीरे से बोला, "नींद की तरफ, जो तुम दोनों पढ़े-लिखे जाहिलों ने बर्बाद कर दी है । "

नीलू बोली , "क्या बोले तुम ?"

रोनी बोला , " अरे ! कुछ नहीं । "

रोनी फिर बोला, "अच्छा चलो , कुछ शर्तों के साथ आना तय करते हैं । दोस्ती जिसको रखनी है रखो लेकिन ये कोई शर्त नहीं होगी । बाकी तुम , एक तरफ कोने में रोना, बिना आवाज़ किये । और तुम काबिल तोते सुनो, तुमको जो भी महान काम करना है वो बिना आवाज़ किये और बिना मेरी नींद हराम किये कर सकते हो । "

तो ऐसे फैसला हो गया । तीनों राज़ी हो गए ।

रोनी ने आखिर में पूछा , "तुम दोनों नाम तो बता दो। "

रोनी को सुंदर मैना के नाम में रुचि थी इसीलिए उसकी तरफ देख के बोला ।

नीलू बोली , " ये सब नहीं ! और बताना भी होगा तो तुम्हे कभी अकेले में बता दूँगी । "

सोनू अपना नाम बोलने ही वाला था, पर नीलू की बात सुनकर बोलता है, "हमको भी नहीं बताना इस नकचढ़ी को अपना नाम । काम से काम रखेंगे । बस ।"

यक़ीन हम किसी पर आसानी से करें या मुश्किल से, लेकिन राय बड़ी आसानी से बन जाया करती है । एक दूसरे के बारे में राय बना कर तीनों पेड़ के ऊपर वाले हिस्से की तरफ से होते हुए अपने अपने कमरे में चले गए ।

कृत्रिम चोंच

हर साल जिस दिन नए आए विद्यार्थियों का पहला पड़ाव लाल पेड़ पर पूरा होता था उस दिन लाल पेड़ में जलसा हुआ करता था । कहते हैं लाल पेड़ की रोशनी से पूरा मुस्कानवन लाल हो जाता था । लाल पेड़ के सबसे ऊपर के हिस्से में रात्रि भोज का इंतेजाम हुआ था । सोनू तोता और रोनी मोर साथ बैठ कर खाने का आनंद ले रहे थे ।

सोनू ने रोनी से बोला, "पता है तुमसे इतनी अच्छी दोस्ती क्यों हो गयी ?"

रोनी ने पहले धीरे से बड़बड़ाया, "अब तुम चिपक गए तो हम क्या करते । दूसरा कोई ऑप्शन बचा ही नहीं ।"

"क्या बोला तुमने ? सुनाई नहीं दिया हमको ?"

"क्योंकि शायद सबसे पहले तुमसे ही बातचीत शुरू हुई । "

"हाँ ये तो है ही और पता है हमको तुम्हें देख के लगा था कि तुम शांत हो और चालाक भी तो कभी न कभी काम आ जाओगे। "

रोनी ने चोंच को साफ करते हुए कहा, "तुम सच में गधे हो । जैसा नीलू कहती है। दोस्ती काम आने के लिए नहीं की जाती सोनू ।"

सोनू ने थोड़ा अब खीझते हुए कहा, "तो मतलब, हम मुसीबत में रहे तो तुम नहीं आओगे बचाने ? "

"हाँ भाई हाँ । आएँगे । यहाँ तुम्हारे अलावा है ही कौन ? हम तो बस ये कह रहे थे कि सिर्फ इसी वजह से दोस्ती करनी भी तो सही नहीं । हम साथ हैं क्योंकि साथ रहना अच्छा लगने लगा ।"

"तुम और तुम्हारी बड़ी बड़ी बातें मेरे पल्ले नहीं पड़ती । वैसे तुम्हारी तो वो नकचढ़ी नीलू भी दोस्त है ही। "

रोनी आगे कुछ बोलता इससे पहले कमरे में पत्तों ने घोषणा शुरू कर दी। लाल पेड़ की बात पत्ते ही सारे लोगों तक पहुँचाते थे। घोषणा करने की ज़िम्मेदारी भी इन्हीं की थी ।
तो घोषणा हुई , "सभी दूसरे पड़ाव में जाने वाले ध्यान दें । परसों से शिकारी बचाव कला की प्राथमिक शिक्षा शुरू होगी । किताबें आपके कमरे में पहुँच चुकी हैं । परसों सुबह पेड़ के बीच में सुरक्षा कमरा नंबर 99 में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाएं। आगे की जानकारी वही मिलेगी । कल के अवकाश का आनंद लें । लोहितवृक्षस्य शुभाशीष ! "

रोनी और सोनू तोता ने एक दूसरे को देखा और फिर हँसने लगे । सोनू ने कहा, "यार पता ही नहीं चला कैसे चार महीने बीत गए ।"

" हाँ यार । जीवन के ये चार महीने सोकर ही बिता दिया । चलो अब चलते हैं ।"
जाते वक़्त रोनी की नज़र नीलू पर पड़ी । नीलू बहुत गंभीरता से मीठी गौरैया से बात कर रही थी। मीठी गौरैया शायद तीसरे पड़ाव में थी । रोनी ने सोनू से कहा, "तुम चलो हम आते हैं ।"

सोनू बोला, "हमको तुमसे कुछ बात करनी है ,इसीलिए जल्दी आ जाना । "
रोनी ने हाँ में सर हिलाया और नीलू की तरफ बढ़ गया ।
नीलू मीठी गौरैया से नए पड़ाव के बारे में पूछ रही थी, "नीला पेड़ प्रकाशित शिकारी जाल और बचाव इस पड़ाव में ही पढ़ना था न ?"

मीठी ने कहा, "नहीं ! जाल के बारे में चौथे पड़ाव में पढ़ना होता है । अभी बस शुरुआती चीज़ें ही बताएंगे । नीले पेड़ प्रकाशन की कोई किताब अभी नहीं पढ़ना, ये तुम्हारे समझ में नहीं आएगी। लाल पेड़ प्रकाशन की किताबें ही पढ़ो फिलहाल । "

इतने में बेचू कौआ ने कुटिल हँसी हसते हुए कहा, "अरे हमारे पास आ जाना, हम सारी किताबें पढ़ा देंगे ।"

मीठी ने बेचू से कहा, "तुम दूर रहो इस बच्ची से ।"

बेचू के जाते ही मीठी ने कहा, "नीलू ज्यादा नहीं पढ़ना होता पहले और दूसरे पड़ाव में । तुम इतनी परेशान मत रहो। "
मीठी की बात सुनते ही तभी वहाँ पहुँचा रोनी मोर तपाक से बोला, "हम भी वही कहते हैं । इतना नहीं पढ़ना होता । ये समझती ही नहीं ।"

मीठी ने अब हँसते हुए कहा, "तुम्हारे जितना सोना भी नहीं होता । नीलू के लिए बोल रही थी ये बात । रोनी तुम थोड़ा बहुत पढ़ाई कर लिया करो ।"

रोनी अब थोड़ा झिझकते हुए नीलू से बोला, "चलो न नीलू ।"

मीठी ने भी कहा, " हाँ जाओ नीलू, आज थोड़ा मन बहला लो ।"

नीलू और रोनी साथ बहुत वक़्त गुज़रने लगे थे । नीलू का कोई एक सच्चा दोस्त इस लाल पेड़ पर था तो वो रोनी ही था । वो अपनी सारी बातें रोनी से कहती थी । दोनों आज फिर दयालु झरने के पास पहुँच गए ।

वहाँ पहुँच कर नीलू को उदास देख कर रोनी ने बोला, "अरे नीलू ! अगले परीक्षा में तुम पक्का पहला स्थान लाओगी । इस बात पर क्या उदास होना ।"

नीलू ने कहा, "चुप रहो तुम ।"

रोनी ने बोला, "अब हम क्या कर दिए ?"

नीलू ने गुस्से में कहा, "सारा दिन तुम उस सोनू तोता के साथ घूमते रहते हो । हमारे लिए ज़रा सा वक़्त नहीं रहता तुम्हारे पास । हम यहाँ अपने घर को याद करके मरते रहते हैं और तुमको न सोने से फुर्सत है न उस गधे से ।"

रोनी ने हसते हुए कहा, "अरे ! सारा दिन तो तुमसे ही बात करते रहते हैं ।"

नीलू ने अब मुँह घूमाते हुए कहा, "अच्छा ! ठीक है फिर तो तुमको अब सोनू के पास जाना चाहिए । वैसे भी हम है ही कौन ?
और तुम ये हँसना बंद करो नहीं तो मार खाओगे । "

रोनी ने अब प्यार से पूछा , "अच्छा तुमको ये सोनू क्यों नहीं पसंद ? अब नाराज़गी छोड़ देनी चाहिए । उसको बात करने का ढंग नहीं लेकिन दिल का बहुत अच्छा है ।"

"हम जा रहे हैं , लगता है तुमको कोई और बात नहीं करना है आज ।"

"अच्छा रुको , तुम्हे पता है तुम्हारी मुस्कुराहट बेहद खूबसूरत है पर ये गूलर के फूल जैसा है सिर्फ भाग्यशाली लोगों को ही ये देखना नसीब होता है । तुम मुस्कुराते रहो नीलू ।"

नीलू अब थोड़ा शर्माते हुए कहती है, "बस ! अब न ये मस्का लगाना छोड़ो । वैसे एक बात बताए , तुम कुछ भी बोलते हो तो तुम्हे सुनना अच्छा लगता है । अच्छा वो कौन सी कविता सुनाई थी तुमने ?"

रोनी झरने की तरफ देख कर बोला,

"बंधन को तोड़ तू साथ चल
आज़ाद दुनिया में चल साथ चल

उदासी को छोड़ इस उदास दुनिया में
मुस्कुरा कर चल, तू साथ चल

चल तुझे नीले आसमानों के पार ले चलूँ
सपनों की दुनिया में पंख फैला और साथ चल"

नीलू ने मुस्कुराते हुए रोनी से गले लग गयी और कहा, "तुम नहीं होते रोनी तो पता नहीं हमारा यहाँ क्या होता ।"

"अब देर हो गयी और अब हम दोनों को वापस चलना चाहिए ।"

"थोड़ी देर यही रहो न ! फिर चलते हैं ।"

रोनी को सोनू का ध्यान आया पर फिर भी वो वही बैठ गया ।

जब कोई प्रेम में होता है तो क्या नहीं करता , बस किसी की छोटी से छोटी ख़्वाहिशें पूरी करने के लिए । रोज शाम जल्दी सो जाने वाला रोनी अब रोज अपने सोने की सबसे पसंदीदा जगह पर आँख खोले किसी को कविताएं सुना रहा था । नीलू ने अब उसकी कविताओं पर ही नहीं, उसकी आवाज़ , गाने , समय ,यहाँ तक उसकी नींद और नींद में आने वाले सपनों पर भी अपना हक़ जताना शुरू कर दिया था ।

उधर सोनू गुस्से में लाल होकर कमरे में इधर उधर घूम रहा था । और सोच रहा था, " आजकल किसी पर भरोसा करने का है ही नहीं । ज़रूर वो उस नकचढ़ी के साथ होगा । आज रोनी को अपने सपने के बारे में बताते और फिर साथ में यहाँ से भाग जाते । लेकिन अब ये हम अकेले करेंगे ।"

एक सप्ताह बीत गया और रोनी ने सोनू से अच्छे से बात नहीं की । रोनी ने पूछने की बहुत कोशिश की पर सोनू ने कुछ ज्यादा नहीं बोला । फिर धीरे धीरे दोनों फिर साथ रहने लगे , पर सोनू ने अपने सपने के बारे में कुछ भी नहीं बताया ।

कुछ महीने बाद सोनू ने बहुत सारी चीज़ें पढ़ कर भागने की योजना तैयार की । एक रात वो अपने बनाये हेलमेट और कृत्रिम चोंच के साथ दयालु झरने के पास वाली काले सूराख़ से निकल कर उड़ान भरने की कोशिश करने लगा । सोनू का पैर फिसल गया और वो नीचे गिर पड़ा और तभी एक जाल नीचे से उठने लगा। सोनू ने कृत्रिम चोंच के सहारे भागने की कोशिश की पर जाल में उलझ गया । बहुत कोशिशों के बाद भी जब वो नहीं निकल पाया तब उसने मदद के लिए आवाज़ लगाई । अब उसे रोनी की मदद नहीं लेने का अफसोस होने लग गया ।

थोड़ी देर में वहाँ नीलू मैना आ गयी और अपनी चोंच से जाल के कुछ हिस्सों को काट दिया । फिर उसने एक पतली सी लकड़ी को चोंच से उठाया और फिर लाल पेड़ के दूसरी तरफ उड़ गयी। सोनू चिल्लाने लगा और वो समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे। नीलू ने लाल पेड़ के दूसरी तरफ हर वक़्त जलती आग से लकड़ी के एक छोर को बस सुलगा लिया और फिर सोनू की पास आयी। आग उसने ज्यादा बढ़ने नहीं दिया पर धीरे धीरे कर के जाल को जला

दिया । सोनू ने अब पंख फैलाये और जाल से बाहर निकल गया । फिर दोनों उड़ कर दयालु झरने के पास वाले पेड़ के हिस्से पर पहुँच गए ।
सोनू ने नज़रे झुका कर नीलू की तरफ देखा और कहा, "हमको माफ़ कर दो ।"
बिना स्वार्थ के मदद और दिल से मांगी गई माफ़ी शायद सच्ची दोस्ती की शुरुआत करवा दिया करती है ।
सोनू ने चोंच ज़रूर कृत्रिम पहना था , पर दिल तो तोते का ही था । सोनू अपने दिल में नीलू की दोस्ती को सहेज कर अपने कमरे की ओर उड़ गया ।

उल्टी दुनिया

लाल पेड़ पर आज सुबह की शुरुआत पत्तों के फड़फड़ाने से हुई थी । पत्तों ने सभी छात्रों के कमरों में एक साथ घोषणा कर दी, "लाल पेड़ रक्षा सचिव रोहित गरूड़ ने सभी छात्रों को पेड़ के ऊपरी हिस्से में शीघ्रता से एकत्रित होने का आदेश दिया है "

सोनू तोता, नीलू मैना दोनों अपने दोस्त रोनी मोर को ढूँढने में लगे हुए थे । सोनू बोला, "इस रोनी को सोने से फुर्सत ही नहीं है, उसको नहीं पता रोहित गरूड़ कितना खतरनाक पक्षी है।"

नीलू मैना बोली, "खतरनाक ? नहीं तो ! हमने तो सुना है पेड़ की सारी पंछियां उनपे मरती हैं । इतनी अधिक उम्र होने के बाद भी आग है उनका शरीर ।"
सोनू बोला, "बस बस ! तुम जाओ ऊपरी हिस्से की ओर ! हम एक बार झरने के पास से घूम के वही आते हैं । "

नीलू मैना ऊपरी हिस्से में पहुँच गयी और थोड़ी देर में वहाँ सोनू तोता भी पहुँच गया ।
नीलू मैना ने सोनू से पूछा, "रोनी मिला ?"
सोनू ने बोला , " नहीं !"

अब नीलू को भी चिंता होने लगी तो उसने बोला, " अच्छा इन सबके बाद ढूँढने चलते हैं । "
फिर सोनू ने पूछा , " मैंने रोहित गरूड़ को कभी देखा नहीं हैं । आ गए हैं क्या ?"

शिक्षकों की भीड़ के बीच में से नीलू मैना ने इशारा किया, " वो जो बीच में हैं जिनको सबने घेर रखा है, वही तो हैं हमारे रक्षासचिव "

सोनू ने हंसते हुए कहा, " अरे ये तो काले स्वरूप वाले हैं और तुम तो कहती थी अच्छे दिखते हैं ।"

नीलू ने सोनू को कहा , " तुम्हारे जैसे गधे को हम नहीं समझा सकते । देखो कैसे हमारी शिक्षा शिरोमणि सोनल चील एकटक उन्हें ही देख रही हैं ।"

सोनू इससे पहले कि कुछ बोलता, रोहित गरूड़ ने ज़ोर से सारे छात्रों को संबोधित करते हुए कहा, " सभी शांत हो जाइए । कल रात किसी ने पवित्र अग्नि को छूने की कोशिश की है । ये लाल पेड़ के नियम के हिसाब से अपराध के श्रेणी में आता है और जिसने भी ऐसा किया है उसे ये पेड़ छोड़ कर जाना होगा । लेकिन अगर कोई सामने से आकर अपना अपराध स्वीकार ले तो उसे क्षमादान मिलेगा । जो भी कोई इस विषय में कुछ भी जानते हैं वो आगे आये ।"

इतना सुनकर नीलू ने सोनू की ओर डरते हुए देखा पर सोनू ने उसे चुप रहने की सलाह दी।

थोड़ी देर में रोहित ने फिर बोलना शुरू किया , " अपराधी का पता लगा लिया जाएगा और अब उसे दंडित भी किया जाएगा । फिलहाल कल पवित्र अग्नि से पेड़ के आसपास आग लगने लगी थी जिससे बहुत अधिक क्षति पहुँच सकती थी लेकिन हमारे ही पेड़ के एक समझदार छात्र ने अपनी सूझबूझ और समझदारी से आग बढ़ने से पहले ही दयालु झरने के पानी से आग बुझा दिया। लाल पेड़ वीरता पुरस्कार से उसे सम्मानित किया जाएगा । छात्र का नाम है - रोनी मोर !!"

रोनी अब सामने आता है और सब आश्चर्यचकित हो जाते हैं । रोनी को घटना के बारे में बताने को बोला जाता है ।

रोनी कहना शुरू करता है , " शिक्षकगण एवं मेरे साथियों ! पेड़ की एक शाखा झुककर झरने में चली जाती थी और गर्मी के दिनों के लिए उसमें बरगद के लटकते जड़ो को बांध कर झरने के पानी को अपने शरीर पे गिरते रहने का इंतेज़ाम किया था । आग हमने इसी विधि का प्रयोग करके बुझाई है । "

रोहित तारीफ करने लगा और फिर जैसे ही पुरुस्कार देने के लिए आगे आया तो रोनी ने थोड़ा घबराते हुए कहा, "पक्षीराज, कुछ और है जो हम आप सबको बताना चाहते हैं । दरअसल ये आग भी हमारे वजह से लगी है और पवित्र अग्नि को छूने वाले भी हम ही हैं । हमने जिज्ञासा वश छू लिया था, लेकिन इतनी गड़बड़ हो जाएगी, ये नहीं सोचा था । हमें क्षमा प्रदान करें ।"

रोहित ने झुंझलाते हुए अब कहा, " तुम अब छात्रों के बीच चले जाओ। "

रोनी ने रोते हुए कहा, "तो हमें लाल पेड़ से निकालेंगे नहीं न ?"

रोहित ने बोला, " पहले अपने सहपाठियों के साथ खड़े तो हो जाओ। "

रोनी अब नीलू और सोनू के पास जाकर खड़ा हो गया । तब रोहित ने फिर बोलना शुरू किया , "हमने पहले ही कहा था कि अपराध स्वीकार लेने पर कोई दंड नहीं दिया जाएगा । लेकिन लापरवाही के लिए रोनी को दयालु झरने के पास वाली शाखा पर जाकर रातभर ध्यान लगाना होगा । वीरता पुरुस्कार ऐसी गलती दुबारा न होने पर साल के अंत में रोनी को दी जाएगी । लोहितवृक्षस्य शुभाशीष ।"

अब सब अपने कमरे की ओर जाने लगे । सोनू तोता रोनी से लिपट गया और बोला, "रोनी तुम नहीं होते तो पता नहीं क्या हो जाता । हम दोनों बहुत डर गए थे , पर तुमने जान बचा ली ।"

रोनी ने पूछा , " तुम भी थे वहाँ ? हम समझ नहीं पा रहे । कैसे ?"
सोनू ने आसपास की भीड़ को देखा और बोला , "चलो कमरे में इस विषय में बात करते हैं । "

नीलू की आँख में आँसू थे पर उसने कुछ बोला नहीं । फिर तीनों अपने कमरे में चले गए ।
रात में सज़ा काटने के लिए रोनी झरने के पास जाने लगा । उसने सोनू को जगाने की कोशिश की, लेकिन उसको गहरे नींद में देख, उसे कमरे में ही छोड़कर झरने की ओर चल पड़ा।
रोनी के लिए तो ये सज़ा थी ही नहीं । उसके लिए तो रोज का आराम ऐसा ही होता था।

दयालु झरने के पास नीलू मैना पहले से मौजूद थी । रोनी को देखते ही वो रोनी से आकर लिपट गई और सुबकते हुए कहने लगी, "तुमने ऐसा क्यों किया ? गलती तो हमारी थी न ? "
रोनी ने कहा , " सोनू ने हमें सब बता दिया है , तुमने जान पर खेलकर उसकी जान बचाई है। हमने तो बस तुम्हे पवित्र अग्नि के पास देखा था, फिर झरने के पास आते और जब तक हम इस ओर पहुँच पाते तब तक शायद तुम दोनों जा चुके थे। लेकिन यहाँ आग लग गयी थी फिर हमने सबको आवाज़ लगाई और आग बुझाई। "

नीलू ने फिर कहा, " लेकिन तुम नहीं होते तो हम मर ही जाते ।"

रोनी ने फिर कहा , " तुम्हें मरने नहीं न देंगे हम, तुम तो जान हो हमारी । हम हमेशा तुम्हारे लिए खड़े रहेंगे । "

नीलू ने अब बात टालते हुए कहा , "अच्छा चलो । अब हमको तुम कोई गाना सुनाओ । बहुत दिन हो गए तुमसे गीत नहीं सुना ।"

रोनी ने कहा, " अच्छा ठीक है , ये सुनो ।"

रोनी गुनगुनाने लगा और पत्ते संगीत देने लग गए । रोनी ने गाया ,

"मेरी जान,
मुझे जान ना कहो मेरी जान
मेरी जान, मेरी जान
जान ना कहो अंजान मुझे,
जान कहा रहती है सदा
अंजाने, क्या जाने
जान के जाए कौन भला
मेरी जान,
मुझे जान ना कहो मेरी जान
मेरी जान, मेरी जान "

नीलू मैना रोनी मोर के गीत सुनते सुनते उससे लिपट कर सोने लगी । रोनी चाँद निहारते हुए , अपने सुनहरे भविष्य की कल्पना करता है और नीलू से पूछता है, "नीलू तुम भविष्य में क्या देखना चाहती हो ?"

नीलू ने कहा, "बहुत पढ़ना है, फिर नीले पेड़ पर जाना है और किसी दिन शिक्षा शिरोमणि बनना है ।"

रोनी ने कहा , "मतलब तुम हमको छोड़कर चली जाओगी ।"

नीलू ने फिर कहा, " अब बहुत रात हो गयी रोनी ! हमको जाना चाहिए और तुम भी आराम करो ।"

उम्मीदों से लबालब भरे प्रेम के समन्दर में नया आशिक़ जब डूब रहा होता है न, तब उसे दुनिया उल्टी नज़र आती है । चाँद और सितारों के समंदर में बनते परछाई को वो सच मान कर उससे लिपट भी जाता है और उसे गीत भी सुना देता है ।

नीलू चली जाती है और रोनी चाँद में भविष्य निहारते हुए सो जाता है ।

गाने के बोल

मुस्कानवन से नगर की ओर जाने का एक गुप्त मार्ग था जो अंधेरी गुफाओं से होकर गुज़रता था । काले पेड़ की जड़ों से बने इन्हीं गुफाओं में विमली शिकारी रहता था । उसने बहुत सारी पंछियों को अपने वश में कर रखा था, जिनकी मदद से वो जंगल के दूसरे पंछियों और जानवरों का शिकार किया करता था । उसकी नज़र बहुत सालों से लाल पेड़ पर थी । लेकिन वो पेड़ की ताक़त और पक्षियों की एकजुटता के कारण लाल पेड़ को कोई बड़ा नुकसान जब नहीं पहुँचा सका तो फिर उसने अपने गुप्तचर लाल पेड़ पर भेजना शुरू कर दिया । उन्हीं गुप्तचरों में था एक कबूतर जिसका नाम था अनमोल। आज अनमोल अपने मालिक यानी विमली शिकारी से जब मिलने उसकी गुफा में आया तो विमली ने कहा, " अनमोल कबूतर, तुम्हें पता है मुझे जीवन में सबसे प्रिय क्या है ?"

अनमोल ने डरते हुए कहा, "नहीं सरकार !"

विमली ने एक गौरैया को हाथों से दबाते हुए कहा, "अपने शिकार की आँखों में मेरा डर और दूसरा कबूतर का भुना मांस ।"
इतना कहते ही वो अंधेरे से बाहर आया और अनमोल कबूतर के सामने आकर हँसने लगा । अनमोल कबूतर ने फिर डरते हुए कहा, "मुझे माफ कर दें सरकार, गलती हो गयी । मुझे नहीं मालूम कि कैसे उस जाल से वो तोता निकल गया । मैंने तो उसे गिरा कर जाल में फँसा भी दिया था लेकिन न जाने कैसे वो जाल से निकल गया।"
विमली ने अब गुस्से से अपनी विलायती चाकू से गौरैया के बदन को छलनी करते हुए कहा, " नहीं पता तो पता करो । नहीं तो अंजाम तुम्हें अच्छी तरह पता है । तुम्हें लाल पेड़ में दाखिला दिलवाने के लिए मैंने तुमपर बहुत मेहनत किया है । अब मुझे वो तोता अपने वश में चाहिए।"
अनमोल कबूतर ने फिर पूछा , " वो सोनू तोता वैसे किसी काम का नहीं है सरकार । वो क्यों चाहिए आपको ?"
विमली ने अब कहा, "तुम जब अपना दिमाग कीड़ों से भर कर न लाओ तब सवाल करना । अभी तुम्हें जाना चाहिए और जल्द मुझे कोई अच्छी खबर ला कर दो। "

इधर लाल पेड़ पर रोनी , सोनू और नीलू के एक साल गुज़र चुके थे । रोनी को वीरता पुरुस्कार मिलने वाला था । नीलू मैना परीक्षा में कुछ अंकों की कमी के कारण दूसरे स्थान पर चली गयी थी और इसीलिए उदास थी ।
रोनी ने नीलू के कमरे में पत्तों के माध्यम से संदेश भिजवाया ," प्रिय नीलू, हमको जीवन में हमेशा लगता रहा कि हम सोने के अलावा कुछ विशेष नहीं कर सकते। लेकिन आज ये पुरस्कार मिलेगा तो शायद खुद की नज़रों में थोड़ी सी इज़्ज़त हो जाएगी। और इस दुनिया में हमको अपना कहने वाले बस तुम और सोनू ही हो । सोनू आज सुबह से ही पता नहीं कहाँ गायब है । इसीलिए तुम आ जाना । आओगी तो अच्छा लगेगा ।"

नीलू संदेश सुनने से पहले ही दयालु झरने के पास चली गयी । वो दयालु झरने के पास उदास बैठे झरने को निहार ही रही थी की पास के डाल से आवाज़ आयी, "नीलू , तुम भी नहीं गयी रोनी के पुरस्कार समारोह में ! "
नीलू ने मुड़ के देखा तो पत्तों के बीच से बाहर आता सोनू दिखा ।
फिर उसने कहा, "हमारा मन उदास है । रोनी हमको ऐसे देखकर परेशान हो जाएगा । उसके लिए खुशी का दिन है और हम नहीं चाहते कि हमारी वजह से उसका दिन खराब हो जाए ।"

सोनू ने कहा, "तुम्हारे होने से ही रोनी ज्यादा खुश होता। ख़ैर जाने दो !"
नीलू ने अब पूछा , "तुम क्यों नहीं गए ?"
सोनू ने कहा, " क्योंकि हमने एक सपना देखा था । जो अब तक पूरा नहीं हो सका है और कल एक विशेष चोंच बनाने में भी विफल रहा था। इसीलिए हमारा मन दुखी था और हम यहाँ अपने दुख को झरने में छोड़ देने आते हैं ।"

नीलू को चुप देख सोनू ने पूछा , " नीलू, तुम्हे सपनों में यकीन है ?"

नीलू ने कहा, "नहीं मालूम हमको ! "

सोनू ने कहा, "चलो ! तुमको कुछ दिखाते है । "

नीलू ने पूछा , "कहाँ ?"

सोनू ने बोला , "तुम चलो तो"

और ऐसा कह के सोनू तोता दयालु झरने की तरफ उड़ चला । पीछे पीछे नीलू मैना भी उड़ चली । दोनों अब झरने के सबसे पास जाकर झरने की बराबर में उड़ने लग गए। झरने की फुहार पंखों पर थपेड़े मार रहे थे और दोनोंं ऊपर की ओर उड़ते जा रहे थे । नीलू खुश होकर चिल्लाने लगी । और दोनोंं फिर साथ में चिल्लाते हुए उड़कर झरने के सबसे ऊपर एक पत्थर पर जाकर बैठ गए । वहाँ पर पहुँच कर सोनू ने नीलू के चारो ओर उड़ते हुए कहा, " कैसा लग रहा नीलू अब तुम्हे ?"

नीलू ने कहा, "बहुत अच्छा !"

सोनू ने फिर कहा, " अच्छा चलो फिर । "

ऐसा कह के सोनू तोता, शिवम पर्वत की ओर उड़ने लगा और नीलू मैना भी उसके पीछे पीछे उड़ने लगी।

शिवम पर्वत के ऊपर जाकर दोनोंं बैठ गए । पर्वत से पूरा वन दिखाई देता था । सोनू ने कहा , " नीलू वो देख रही हो, वो क्षितिज जहाँ सूरज अपनी रोशनी के साथ पाताल में मिल रहा है । हमारा सपना है कि एक दिन उसी क्षितिज के पार जाएँगे । इस जंगल के हर जीव , हर स्थान को हम जान चुके हैं । अब हमको जंगल पार जाना है । "

नीलू ने कहा , "देखने में तो सच में मनोरम लग रहा । लेकिन वहाँ जाने के लिए जान का बहुत जोखिम है । पहले लाल पेड़ पर अच्छी तरह से सुरक्षा की विधि जान लो । और तुम जानते हो , रोनी कहाँ से आया है ? मतलब उसका घर कहाँ है ?"

सोनू ने कहा, " हाँ वो दर्शी दलदल के पास रहता था । उस दलदल में बहुत सारे गुण हैं । उसके पास की मिट्टी का लेप लगाने से किसी भी तरह के घाव भर जाते हैं ।"

सोनू थोड़ी देर चुप रहकर कहा, "तुम्हे पता है ,हमने अपने सपने के बारे में तुम्हारे अलावा आजतक किसी को नहीं बताया । "

नीलू ने भी कहा, "और हमने भी आज तक इतनी आज़ाद हवा में सांस नहीं ली है । "
सोनू ने कहा, "अब हमें चलना चाहिए । अंधेरा होते ही जंगल खतरनाक हो जाता है ।"
नीलू और सोनू अब वापस लाल पेड़ की ओर बढ़ चले । लाल पेड़ के पास आते हुए अनमोल कबूतर ने दोनों को देख लिया था । उसने धारदार धागा उनके रास्ते में बांध दिया । उस धागे से टकरा कर उड़ने वाले जीव मूर्छित हो जाया करते थे । नीलू आगे आगे उड़ रही थी और ज्योंही वो धागे के करीब आयी पीछे से सोनू तोता चिल्लाया, "नीलू नीचे झुको जल्दी ।"
नीलू रुक गयी और सोनू भी धागे में टकराते टकराते बच गया । फिर दोनों घबरा कर लाल पेड़ पर पहुँचे । वहाँ पहुँच कर नीलू ने पूछा, "तुम्हे कैसे पता चला की वहाँ धागा है ? "
सोनू ने कहा , "हमको जालों के बारे में पता है और हमको खतरे का आभास थोड़ा पहले हो जाता है , इसीलिए वहाँ पर हम धीरे उड़ते हुए ध्यान से सब देख रहे थे । "

नीलू ने मुस्कुराते हुए कहा , "फिर उस दिन जाल में कैसे फँस गए बुद्धू ?"

सोनू ने कहा , "नीचे जाल था ये हमको आभास हो गया था लेकिन हमको लगा जैसे किसी ने पीछे से धक्का दे दिया हो और हमारा पैर फिसल गया ।"

सोनू ने थोड़ी देर रुक कर कहा , "यार ! रोनी इंतेज़ार कर रहा होगा । हम दोनोंं को चलना चाहिए ।"

नीलू ने कहा , " हम अपने कमरे में जाते हैं , बहुत थक गए हैं ।"

दोनों कमरे में चले गए ।

नीलू अपने कमरे में आयी तो दो संदेश जो रोनी ने भेजा था पत्तों ने सुनाने की आज्ञा माँगी । नीलू लेट जाने पर संदेश सुनना शुरू किया जिसमें से एक सुबह का था जो नीलू को समारोह में आने के लिए रोनी ने भेजा था ।
देर शाम भेजे दूसरे संदेश में रोनी ने कहा , " दुख के कारण जब हमारे मन का पेड़ सूख जाया करता था तब तुम्हारी एक झलक से हमारे मन में हरियाली आ जाती थी । लेकिन किसी तरह की खुशी तुम्हारे बिना बेकार है । हमें बुरा लगा की तुम नहीं आयी । कल मिलते हैं । - तुम्हारा रोनी "

गानों का जीवन में विशेष महत्व है जैसे की दोस्तों का । मन दुखी रहे तो गानों के कंधे पर सर रख कर रो सकते हैं और मन खुशी से झूमने का करे तो गानों के संग नाच भी सकते हैं । दोस्त भी तो यही करते हैं ।

नीलू ने पत्तों में एक गीत गुनगुनाया और संदेश रोनी को भेज दिया।

गाने के बोल थे ,
"आने वाला पल जाने वाला है
हो सके तो इस में ज़िंदगी बिता दो
पल जो ये जाने वाला है।"

प्रेम गीत

लाल पेड़ के पश्चिम की ओर से एक प्रिंसी नामक तालाब था । वहाँ लाल पेड़ पर पढ़ने वाले के बहुत सारे प्रेमी जोड़े अपने प्रेम के मौन गीत गाने आते थे । प्रेम की सुंदर ध्वनि से तालाब के आस पास के हवाओं में भी प्रेम को महसूस किया जा सकता था । लेकिन तालाब के प्रतिबिम्ब में साथ दिखने वाले जोड़े बहुत बार अलग भी हो जाते थे, ठीक उसी तरह जैसे तालाब के पानी से चेहरा मिट जाता है जब अपने चेहरे को पानी में देखने वाला चला जाता है । आज एक प्रेमी जोड़ा वहाँ के एक पत्थर पर साथ बैठा था ।
पत्थर से दूर हटते हुए शालू कोयल ने अपने प्रेमी बेचू कौवे से कहा, "इस पत्थर का नाम वीसी पत्थर है, सब कहते हैं कि ये पत्थर श्रापित है। इस पत्थर के पास बैठने वालों को कभी प्यार नसीब नहीं होता ।"

बेचू कौआ ने हसते हुए कहा, "हमें कौन सी यहाँ आशिक़ी करनी है । बस एक बार लाल पेड़ की सारी विद्याओं में निपुण हो जाए, फिर निकल जाना है घर की ओर ।"

शालू कोयल ने थोड़ा सुबकते हुए कहा, "और हमारे 3 सालों के साथ का क्या ? क्या वो प्यार नहीं ? मैं तो तुम्हारे साथ जीवन गुज़ारना चाहती हूँ और ये क्या इश्क़ के बिना संभव है ? "
बेचू कौआ ने थोड़े गुस्से भरे लहज़े में कहा, "तुम्हारे साथ दोस्ती तुम्हारी सुंदरता की वजह से है । नहीं तो तुम्हारी प्रजाति वालों ने हमलोगों के साथ हमेशा धोखा ही किया है । तुम्हारे साथ जीवन गुज़ारने की बात हम सोच भी नहीं सकते । और इश्क़ तो हमें किसी से नहीं हो सकता । यहाँ जब तक हो हमारे साथ रहो, तुम भी जीवन का आनंद लो और फिर हमारे रास्ते अलग हैं ।"

शालू ने कहा , "शायद मेरी ही गलती है । मुझे चलना चाहिए ।"

सच्चे मन से किये गए प्रेम के फूल को जब बेरहमी से रौंदा जाता है तब प्रेम करने वाले को फूल रौंदने वाले से ज्यादा गुस्सा अपने पर आ रहा होता है ।

शालू कुछ और कहती इससे पहले ही बेचू वहां से जा चुका था और शालू की पलकें ढलते सूरज के साथ झुकने लगी । ढलते सूरज की रोशनी से आकाश लाल हो रहा था और उसी रोशनी से प्रिंसी तालाब भी लाल हो रहा था । शालू की आँखें और प्रिंसी तालाब में अंतर कर पाना उस वक़्त बेहद मुश्किल था ।

रात होने पर लाल पेड़ के दयालु झरने के पास रोनी मोर बैठ कर अशान्त मन से नीलू मैना का इंतेज़ार कर रहा था ।
नीलू मैना ने आते ही रोनी मोर से कहा, "अब बताओ ? क्यों मिलना था तुमको ?"

रोनी ने खिन्न होते हुए कहा, "सच में ये सवाल तुम्हारे मन में आ भी रहा है ? हैरत होती है हमको ? हम दोनों कई दिनों से नहीं मिले, तुम हमारे पुरस्कार वितरण में नहीं आयी और अब ये पूछ रही हो ? क्या हम कभी किसी काम के लिए मिलते थे ?"

नीलू ने थोड़ा मुस्कुराते हुए कहा, "अच्छा बाबा ! हमसे गलती हो गयी । माफ कर दो । देखो हमारा मूड बहुत अच्छा है और अपनी रोती शक्ल दिखा के खराब मत करो ।"

रोनी ने भारी आवाज़ में कहा, "नीलू, हमने तुमसे कुछ पूछा था । तुमने जवाब नहीं दिया ।"
नीलू थोड़ी देर चुप रही और फिर बात बदलते हुए कहा, "तुमने सपने की दुनिया के बारे में सुना है । हम सोनू के साथ शिवम पर्वत को ओर गए थे ।"

रोनी ने नीलू को पकड़ते हुए कहा, "नीलू ,बात मत बदलो ।"

नीलू ने कहा, "रोनी तुम जवाब सुनने के लिए तैयार नहीं हो । हम दोनों को बाद में इसपे बात करनी चाहिए । तुम जाओ ,सो जाओ ।"

रोनी ने नीलू को छोड़ दिया और फिर करीब आते हुए कहा , "जवाब दे दो, हम चले जाएँगे । "

नीलू ने कहा, " अच्छा ठीक है । तुम सबसे अच्छे दोस्त हो । यहाँ हम तुम्हारी वजह से घर से दूर होते हुए भी घर जैसा महसूस करते है । हम मानते हैं कि ये सिर्फ दोस्ती नहीं है । लेकिन हमारे लक्ष्य अलग हैं, जीवन जीने का तरीका अलग है और हम जो सपने देखते हैं उसमें तुम्हारे इस नए रिश्ते को जगह दिया तो शायद दोनों के जीवन को बर्बाद करेंगे । हमको उड़ने दो रोनी, थामने की कोशिश मत करो ।"

रोनी ने कहा, "अच्छी बात है ! आजकल सपने देख रही हो । शायद सोनू के साथ ।"

नीलू ने बीच में टोकते हुए कहा, "ये नहीं कहना था रोनी ! हमको घुटन हो रही है अब ।"

रोनी ने अब रोते हुए कहा, "हमको माफ कर देना । हमको ये नहीं कहना चाहिए था । हमने तुमसे कभी कुछ नहीं माँगा । बिना माँगे बस मोहब्बत की है । अब अगर कुछ मांग लूँगा तो मेरा प्रेम झूठा हो जाएगा । तुम्हारा कल जन्मदिन है । हम तुम्हे हमारे बोझ बन चुके रिश्ते से आज़ादी देते हैं । जाओ ।"

रोनी वहाँ से चला गया । नीलू वही बैठी रोती रही । आज न पत्तों ने कोई संगीत बजाया और न हवाएं कोई गीत गा रही थी। दयालु झरने की तरह पानी बस गिरता रहा नीलू की आँखों से ।

रोनी मन को शांत करने प्रिंसी तालाब के पास पहुँचा । उसे इतनी रात को वहाँ किसी और के होने की उम्मीद नहीं थी । लेकिन वहाँ पहुँचा तो उसने किसी के गाने की आवाज़ सुनी । थोड़े नज़दीक जाकर लगा कि चाँद की रोशनी में दिख रही कोयल लाल पेड़ की ही एक छात्रा शालू थी ।

वो अपने सुरीले आवाज़ में गा रही थी,
"एक सौ सोलह चाँद की रातें,
एक तुम्हारे काँधे का तील
गीली मेहंदी की खुशबू,
झूठमूठ के शिकवे कुछ
झूठमूठ के वादे भी,
सब याद करा दो

सब भिजवा दो,
मेरा वो सामान लौटा दो"

रोनी के पास आने की आहत से वो चुप हो गयी । उसने देखते ही रोनी को पहचान लिया और फिर पूछा , "तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

रोनी ने तालाब में बन रहे चाँद के प्रतिबिंब की ओर इशारा करते हुए कहा , "अपने अशांत मन को शांत करने चाँद के नजदीक आया हूँ । और तुम ?"

शालू ने कहा, "अपनी टूटे दिल को सहेज कर ईश्वर से अपनी गलती के बारे में पूछ रही हूँ ।"

रोनी ने बोला, "तुम्हें ईश्वर के होने में यकीन कैसे हो पाता है ? हमको तो प्रेम में बहुत गहरा यकीन था और आज वो भी डगमगा रहा है । "

शालू ने कहा, "महामारी होने पर पुजारी भी विज्ञान की शरण में जाते हैं और वैज्ञानिक भी किसी ईश्वर के चमत्कार की कामना करते हैं । खैर ये सब तो श्रद्धा की बात है । प्यार या ईश्वर पर यक़ीन अपने वश में है , यक़ीन टूटता है तो बहुत दुख होता है, ये तो पता था लेकिन हमको ही ये दुख क्यों मिला ?"

रोनी ने समझाते हुए कहा, "बाहरी दिखावे से आकर्षण को प्रेम समझ कर साथ में वक़्त बिता लेना यहाँ आम बात है । लेकिन अगर कोई उसी रिश्ते में बीतते वक़्त के साथ गम्भीर होकर सच्चे प्रेम की आशा में भावनाओं के असीम आकाश में उड़ने की कल्पना भी कर ले तो प्रेम के पंखों को निर्दयता से दिखवा करने वाला उसका साथी ही काट देता है । "

शालू अब थोड़ी शांत हुई और फिर उसने पूछा , " तो फिर बिना पंखों के कोई उड़ान कैसे भरे ? क्या करना चाहिए ?"

रोनी ने थोड़ा सोचा और फिर कहा, " प्रेम के पंख तो भावनाएं हैं और जीवन में उड़ने से डरना बेवकूफी है । पंख तो किसी दोस्त की मदद लो तो फिर से आ जायेंगे। और प्रेम भी किसी दोस्त से ही हो तो शायद उड़ने में कभी कोई दिक्कत नहीं आएगी ।"

शालू ने कहा, "क्या मुझसे दोस्ती करोगे ?"
रोनी ने उगते सूरज से लाल हुए आकाश की ओर देखते हुए कहा, "हमको रोज गाने सुनाओगी तो हाँ । नहीं तो फिर जाने दो ।"

इतना कह कर दोनों हँसने लगे ।
दो टूटे दिल वालों की दोस्ती बहुत जल्दी होती है । किसी अनजान में अपनेपन जैसा महसूस होता है ।

वैसे कुछ रिश्तों में रातें इतनी लंबी होती है कि सुबह होने के बाद भी टूटे दिल खुद को अंधेरे में बंद रखते है ।

रोनी और शालु के चोंच पर सुबह की पहली धूप पड़ी और वो लाल पेड़ की ओर उड़ गए।

मौत

सोनू ने रोनी को जगाते हुए कहा, "उठो रोनी ! आज शिक्षा शिरोमणि सोनल चील हमें लाल पेड़ का इतिहास पढ़ाएंगी ।"

रोनी ने उठते हुए कहा, "हमको जाने का मन तो नहीं है लेकिन पहले की बहुत सारी कक्षाएं छूट चुकी हैं । तुम चलो सोनू । हम आते है ।"

लाल पेड़ के तहखाने में आज की कक्षा थी । रोनी मोर को निकलने में देर हो चुकी थी। वो जैसे ही कक्षा में पहुँचा, सोनल चील बिजली की गति से रोनी की ओर उड़ी और रोनी के नजदीक आकर चिल्लाते हुए कहा, " कहाँ थे ?"

रोनी ने इतनी तेज उड़ान इतने कम जगह में कभी नहीं देखी थी । अभी सोनल चील के आवाज़ से डर के वो गिर भी गया । उसने उठते हुए कहा, "नींद खुलने में देरी हो गयी थी । हमको क्षमा करें । "

सोनल चील ने अपने पढ़ाने के स्थान पर जाते हुए कहा, "कहीं सोते हुए आपको कोई शिकारी आपके कमरे से उठा कर न ले जाए । अपनी जगह पर बैठ जाएँ । "

थोड़ी देर बाद सोनल चील से अपने चश्मे को ठीक करते हुए कहा, "सभी लोग पहले अध्याय का पाँचवा पन्ना खोलेंगे और चित्र को ध्यान से देखेंगे । पौराणिक कथाओं के अनुसार लाल पेड़ मुस्कानवन के सबसे पहले पेड़ों में से है । ये वन के पांच स्तम्भों में से एक है । क्या आपमें से कोई बता सकता है कि बाकी के चार स्तम्भ क्या क्या हैं ?"

नीलू मैना ने जवाब देने के लिए अपने पंख खड़े किये और फिर कहा, "बाकी के चार स्तंभ हैं - मीता झील , दर्शी दलदल, दयालु झरना और प्रिंसी तालाब "

सोनल चील ने कहा, "बाकी के चार स्तंभों के बारे में हम बाद में पढेंगे । अभी लाल पेड़ के इतिहास के बारे में जानते हैं । लाल पेड़ का नाम इसके रंग की वजह से नहीं पड़ा । इस पेड़ को इसके स्वरूप में बनाये रखने में बहुत सारे पंक्षियों ने अपने खून से पेड़ की जड़ों को सींचा है । बाद में इस पेड़ की ताक़त प्यार , भरोसा, कुर्बानी और एकता के कारण बढ़ती ही

गयी । लाल पेड़ के शिक्षा संस्थान बनने के समय, एक प्रेमी जोड़े ने अपनी सारी कलाओं की शक्ति से पेड़ के चारो ओर एक अदृश्य दीवार बना दी थी । इस दीवार के कारण कोई भी इंसान इसमें कदम नहीं रख सकता । "

नीलू मैना ने फिर पूछा, "मैंने तो सुना है कि पहले के वक़्त में इस दीवार के कारण कोई अंदर का पक्षी भी बाहर नहीं जा सकता था ? "

सोनल ने कहा, "नहीं ऐसा कभी नहीं था । पक्षियों के आवागमन में कभी बाधा नहीं बनी ये दीवार । मन को पढ़ सकने की क्षमता थी इस दीवार में । पहले जो पंछी इस दीवार के पार जाने की कोशिश लाल पेड़ छोड़ने के मन से करते थे वो दीवार पार करते ही मृत्यु लोक पहुँच जाते थे । लेकिन अब ऐसा नहीं है । "

सोनू ने उत्सुकता से पूछा , "ये नियम बदल कैसे गया ?"

सोनल ने कहा, "बहुत साल पहले इस पेड़ पर पढ़ने आया था एक तोता जिसका नाम था - मंगल । और वो नीतू तोता के प्रेम में पड़ गया । उन दोनों को पेड़ से बाहर अपनी दुनिया बनानी थी । कहते हैं उन्होंने पेड़ को नियंत्रित करने वाली एक कुंजी की खोज कर ली थी । और फिर दोनों ने पेड़ के नियम में कुंजी की मदद से बदलाव कर दिया और दोनों उड़ कर मीता झील पर रहने चले गए ।"

अनमोल कबूतर ने पूछा, "अब वो कुंजी कहाँ है ?"

सोनल ने कहा, "ये बात किसी को नहीं पता । "

नीलू ने पूछा, "इस कुंजी की पहली बार खोज करने के बाद से पेड़ असुरक्षित हो गया है न ?"

सोनल ने जवाब दिया, " सुरक्षा और आज़ादी में से लाल पेड़ ने हमेशा आज़ादी को चुना है । कुंजी उसी को मिल सकती है जिसको इस पेड़ को नियंत्रित करने में कोई दिलचस्पी नहीं होगी। दीवार के मन पढ़ पाने की क्षमता नहीं रही , लेकिन इंसान अब भी अंदर नहीं आ सकते हैं ।"

रोनी ने कक्षा से बाहर निकलते हुए सोनू से पूछा, "तुम भी तो मीता झील के पास से ही आये हो न ?"

सोनू ने हाँ में सर हिलाया और फिर पूछा, "तुम्हारी और नीलू की बात क्यों नहीं हो रही है ?"

रोनी बोलने ही वाला था कि इससे पहले बेचू कौवा ने अपने साथियों के संग आकर उसे धक्का दे दिया । सोनू ने बेचू के सामने खड़े होकर कहा , "क्या दिक्कत है तुम्हे ?"

रोनी के खड़े होने के बाद बेचू ने कहा, "सोनू तुम इस बदगो के साथ मत रहो। और अब तो इसने अपने ही जैसों के साथ दोस्ती भी कर ली है । "

सोनू ने रोनी की तरफ देखते हुए कहा, "हमको तुमसे सीखने की ज़रूरत नहीं है , किससे साथ रहें ।"

बेचू के चले जाने के बाद सोनू ने पूछा, "ये बदगो क्या होता है ? उसने तुम्हे क्यों कहा ?"

उसी समय शालू कोयल वहाँ आ गयी और उसने कहा, "कुछ पक्षियों को लगता है कि उनकी प्रजाति ऊँची है और बाकी की प्रजाति नीची। श्रमिकों के बच्चे, जंगल को साफ रखने वाली प्रजाति और दर्शी दलदल के आसपास रहने वाले सभी पक्षियों को ये निचली प्रजाति ही समझते हैं और उन्हें बदगो कहते हैं ।"

रोनी ने कुछ नहीं बोला और फिर सोनू ने कहा, "चलो नीलू से मिलने झरने के पास चलते हैं । "
रोनी ने कहा, "मेरा मन नहीं है अभी, तुम चले जाओ ।"

सोनू उड़ कर झरने की तरफ चला गया । फिर शालू कोयल ने रोनी से कहा , "प्रेम पाने के स्वार्थ में दोस्ती तोड़ देना सही नहीं है। तुम्हे नीलू से बात करनी चाहिए । "

रोनी ने झरने की ओर चलने का इशारा देते हुए कहा, " शालू , हमको दिल टूटने का दुख नहीं है । अगर उसने स्वाभिमान के लिए प्रेम का त्याग किया होता तो हमको उसपर गर्व होता। अगर हमको उसकी दोस्ती के लिए अपने प्यार का गला हज़ार बार घोंटना होता तो हम वो भी कर देते । लेकिन उसने अपने निजी स्वार्थ के लिए प्यार को मार देने की कोशिश की, जिसमें मर गया हमारा भरोसा जो एक दोस्त का दूसरे दोस्त पर होता है। और अब अगर बात हो भी जाए तो हमको हमेशा ऐसा ही लगता रहेगा कि हम किसी अनजान से नई दोस्ती करने जा रहे हैं ।"

शालू ने अब कुछ नहीं कहा और जैसे ही दोनों झरने के पास पहुँचे वहाँ बैठी नीलू उड़ कर शिवम पर्वत की ओर जाने लगी ।

सोनू ने कुछ महसूस करते हुए नीलू को आवाज़ लगाई , "नीलू मत जाओ । कुछ खतरा महसूस हो रहा है ।"

जबतक सोनू उसकी ओर उड़ता अनमोल कबूतर ने छिप कर एक डाल से उसके सर पर मार दिया और वो गिर पड़ा । सोनू को गिरता देख रोनी मोर , नीलू मैना और शालू कोयल तीनों उसकी तरफ उड़े ।

नीलू मैना जैसे ही पेड़ की ओर उडने लगी वैसे ही दो चीलों ने उसपे हमला कर दिया । दोनों चीलों ने चोंच से धागा बाँध रखा था जिससे उन दोनों ने नीलू के पैर को बाँध दिया । नीलू को मुसीबत में देख कर रोनी ने शालू से सोनू को बचाने को कहा और खुद नीलू की तरफ उड़ चला । दोनों चील जैसे ही नीलू को ले कर उड़ने वाले थे , नीलू ने धागे को अपनी चोंच से काट दिया और अलग हो गयी । फिर एक चील ने किसी विस्फोटक को अपनी चोंच में फँसा लिया और दूसरे ने माचिस अपनी चोंच से जलाते हुए उस विस्फोटक में आग लगा दी । फिर चील ने उस जलते विस्फोटक को घूमा कर नीलू की तरफ फेंका । रोनी विस्फोटक के सामने आ गया और नीलू को धक्का देकर दूर कर दिया । भयंकर विस्फोट से घायल होकर रोनी झरने के पानी में गिर गया । चीलों ने दुबारा हमला करने की सोची लेकिन तब तक वहाँ रक्षा सचिव रोहित गरूड़ आ गए और उन्होंने अपने पंखों से तेज़ आँधी ला दी जिससे दोनों चील घबरा कर भाग गए ।
सोनू , शालू और नीलू ने मिलकर रोनी मोर को झरने से बाहर निकाला और लाल पेड़ पर लाकर लिटा दिया । रोनी की साँसें नहीं चल रही थी और तीनों की आँखों से लगातार आँसू जा रहे थे ।

पत्तों से गीत बजने लगा ,

"जीवन का यही है दस्तूर
प्यार बिना अकेला मजबूर
दोस्ती को माने तो सब दुख दूर
कोई काहे ठोकर खाए
मेरे संग आए
के पग-पग दीप जलाए
मेरी दोस्ती मेरा प्यार
मेरी दोस्ती मेरा प्यार "

हमने जान देने वाले दोस्तों और ऐसी दोस्ती से भागना सीख लिया है । अपने जीवन में स्पेस की तलाश में अंधे होकर भाग रहे हैं । एक दिन सूनापन जब हमें निगल रहा होगा तब हम उस एक दोस्त की ओर ताकेंगे, वो खड़ा मिले ये ज़रूरी नहीं क्योंकि अब आप दोनों के बीच

वो स्पेस होगा जिसकी तलाश में न जाने आप कब से भटक रहे थे । मौत लेकिन ताक़तवर होती है । उसके आने के आहट से ही कई के दिल में प्यार और आँख में आँसू आ जाते हैं ।

मौन : एक किताब

रोनी को बेहोश देख कर रोहित गरूड़ ने पेड़ की एक डाली दयालु झरने में कर दिया और फिर डाल छोड़ने से पानी की बहुत सारी बूंदें बेहोश पड़े रोनी पर पड़ी । ऐसा लग रहा था जैसे बारिश हो रही हो । फिर रोहित गरूड़ ने रोनी के पास जाकर अपनी पँखों से ठंडी हवा रोनी के शांत पड़े देह पर चलाने लगे । थोड़ी देर बाद रोनी की साँसें वापस आ गयी लेकिन वो बेहोश ही पड़ा रहा । तब तक सोनल चील वहाँ चिकित्सा शास्त्र के ज्ञाता मिर्ज़ा उल्लू के साथ आयी और कहा, "सारे पक्षी रोनी से दूर हट जाएं ।"

मिर्ज़ा उल्लू के साथ आये बहुत सारे पक्षियों ने रोनी को उठा कर पेड़ की डाली से बने चारपाई पर डाल दिया । फिर पत्तियों के समूह ने उसे उड़ा कर लाल पेड़ के दक्षिणी हिस्से में स्थित चिकित्सा कक्ष में रख दिया जहाँ तुरंत उसका उपचार शुरू किया गया । मिर्ज़ा उल्लू ने कहा कि जल्द ही रोनी ठीक हो जाएगा । रोहित गरूड़ ने सभी को अपने कक्ष में जाने को कहा और फिर खुद सोनल चील के साथ चिकित्सा कक्ष की ओर चले गए । सबके जाने के बाद भी नीलू मैना, शालू कोयल और सोनू तोता दयालु झरने के पास बैठे रहे ।
सोनू तोता ने नीलू से कहा, "हमको सर में बहुत दर्द हो रहा है । हम सोने जा रहे हैं , तुम दोनों भी जल्द ही कमरे में चले जाना ।"
सोनू के जाने के बाद नीलू मैना शालू के पास आयी और गले लग कर रोने लगी । शालू ने बहुत देर तक कुछ नहीं कहा और फिर उसने नीलू के शांत होने के बाद कहा, "फिक्र मत करो , जल्द ही रोनी ठीक हो जाएगा ।"

शालू ने थोड़ी देर चुप रहने के बाद फिर से नीलू को कहा, "तुमने कभी रोनी के प्यार को अपनी आँखों में बसने क्यों नहीं दिया ? क्यों खुद से और रोनी से झूठ बोलती रही नीलू ?"

नीलू ने थोड़ा सोचकर शालू से कहा,

" 'झील सूख बन रहे होंगे दलदल
दलदल बदल रहे होंगे जंगल में
जंगल में उग रहे होंगे पहाड़
पहाड़ टूट बन रही होंगी ज़मीन

ज़मीन पर लहलहा रहे होंगे खेत
खेतों से दाने चुग रही होगी मैना

झील के होने से दाने लाने तक
इंतेज़ार करेगा वो प्रेमी जिसे तुमने
झील पर आने का वादा किया था '

नीलू थोड़ी देर चुप रही और फिर उसने कहा, "ये हमको रोनी ने सुनाया था । हम दोनों के बीच क्या था ये तो हम को भी नहीं पता लेकिन रोनी अपनी नीलू से बेपनाह मोहब्बत करता था । ऐसी मोहब्बत को हम मना कर दें, हमारे में इतनी हिम्मत नहीं थी। लेकिन कुछ ऐसे भी अभागे होते हैं जिन्हें प्यार के बिना ज़िन्दगी गुज़ारने की आदत सी हो जाती है और उन्हें किसी से लिए हद से ज्यादा मायने रखना भी डर से भर देता है । हम नहीं चाहते थे कि उसका प्यार हमारे जैसे अभागे पर बर्बाद हो ।"
नीलू ने फिर आँसू पोछते हुए शालू से कहा, "हमने सुना है कि तुम बहुत अच्छा गाती हो । हमको भी एक गीत सुनाओ न ।"
शालू ने झरने में बनते चाँद की परछाई को देखते हुए कहा, "रोनी अब किसी से भी इस तरह का प्यार नहीं कर पायेगा नीलू । हो सकता है कि कभी ऐसा समय आये जब हमें लगे कि रोनी को किसी और से प्यार हो गया है । लेकिन वो हमारी कपोल कल्पना ही होगी । जैसे चाँद की परछाई को अपने साथ पाकर इस झरने को लगता होगा की चाँद इसका हुआ लेकिन चाँद हमेशा आकाश का ही था और हमेशा उसका ही रहेगा ।"

शालू ने अब झरने में दिखते चाँद की परछाई को देखा और गीत गाने लगी,

" वो प्यार जिस के लिये हमने छोड़ दी दुनिया
वफ़ा की राह पे घायल वो प्यार आज भी है
किसी नज़र को तेरा इंतज़ार आज भी है
कहाँ हो तुम कि ये दिल बेक़रार आज भी है "

एक दिन बाद रोनी होश में आया तो उसे मिर्ज़ा उल्लू ने कहा, "अब तुम पूरी तरह से ठीक हो चुके हो । लेकिन कमरे में जाने से पहले रक्षा सचिव ने तुम्हे अपने कार्यालय में बुलाया है ।"

रोनी जब कार्यालय में पहुँचा तो रोहित गरूड़ अपने पंजे में एक मोर पंख लिए किसी गहरे चिंतन में थे । रोनी ने उनको देखते ही कहा, "लोहितवृक्ष: प्रणाम !"

रोहित ने रोनी की तरफ घूमते हुए कहा, "तुम्हारी तबीयत अब ठीक है न ?"

रोनी ने हाँ में सर हिलाया फिर रोहित ने कहा, "ये जला हुआ पंख तुम्हारा ही है , इसको हमेशा अपने साथ ही रखना । ये तुम्हारे बलिदान की निशानी है ।"

रोनी कुछ पूछता इससे पहले ही रोहित ने फिर कहा, "ये बस रख लो, वजह जाने बिना । तुम्हे एक बात और बोलूँगा । रोनी ये जले हुए पंख धीरे धीरे ठीक हो जाएंगे लेकिन तुम्हारे जले हुए दिल को ठीक तुम्हे ही करना होगा । और जले दिल माफ़ी से ही ठीक होते हैं । इसीलिए माफ़ कर दो ।"

रोनी ने पूछा , " किसे माफ़ कर दें ?"
रोहित ने कहा, "खुद को माफ़ कर दो ।"

रोनी ने कहा, "हम नहीं समझे !"

रोहित ने कहा, "तुम्हे पता है वो दो चील कौन थे ?"

रोनी ने ना कहा तो रोहित ने फिर कहा, "ये दोनोंं चंगू-मंगू चील थे । विमली शिकारी ने उन्हें वश में कर रखा है । और विमली शिकारी बहुत ही खतरनाक है । उसने यही से पढ़ाई की थी और अब इस जंगल के लिए भी खतरा बना हुआ है ।"

रोनी ने फिर पूछा , "विमली तो इंसान है न ? फिर उसने यहां से पढ़ाई कैसे की ?"

रोहित ने कहा, "विमली शिकारी बहुत पहले एक गिद्ध था । इस जंगल में एक काला पेड़ भी था, उसने उसी पेड़ की शक्ति से खुद को इंसान बना लिया और अमर भी हो गया । वो इस लाल पेड़ के सबसे अच्छे विद्यार्थियों में से एक था लेकिन फिर एक चील के अधूरे प्यार में उसका दिल जल गया । उसने दुख में पेड़ से भागने की कोशिश भी की लेकिन लाल पेड़ ने इसमें भी उसका साथ नहीं दिया और फिर पेड़ से बदला लेने के लिए उसने काले पेड़ की ताक़त का इस्तेमाल किया और अब ये ज़हर इतना बढ़ चुका है कि उसपे खुद का भी नियंत्रण नहीं है । उसने उस चील की आत्मा को भी उस काले पेड़ में कैद कर रखा है । हमने काले पेड़ को जला दिया था लेकिन वो काले पेड़ के जड़ों में ही गुफा बना कर रहने लगा ।"

रोनी ने अब पूछा , " तो क्या प्यार में सच में ताक़त होती है ? लेकिन ये तो हैवान बन गया । "

रोहित ने मुस्कुराते हुए कहा, "जो तुमने किया वो प्यार की ताक़त थी । लेकिन अगर प्यार में मिलावट हो तो ये कमज़ोर करने लगता है । और फिर विमली ने जो किया उससे रोज़ उसकी आत्मा का एक हिस्सा काला पेड़ सोख लेता है । वो ज़िंदा रहते हुए भी रोज़ मरता है।"
रोनी ने पूछा , "ऐसी ज़िन्दगी कौन चाहेगा ?"

रोहित ने कहा, "इसीलिए माफ़ कर दो रोनी ।"

रोनी वहाँ से निकल कर सीधे दयालु झरने के पास गया । वहाँ सोनू ने उसे देखते ही गले लगा लिया । दोनों रोने लगे और फिर सोनू ने रोनी को चोंच से मारते हुए कहा, "हमको छोड़ कर तुम इस नकचढ़ी को बचाने गए थे न"
पास बैठी नीलू बस रोनी को निहारती रही ।

रोनी कुछ बोलता इससे पहले ही सोनू ने कहा, "गधा हम नहीं तुम दोनों हो । पसंद करते हो तो बोलते क्यों नहीं एक दूसरे को । इंसानों की तरह चीज़ों को उलझाने की आदत हो गयी है ।"

रोनी ने कहा , "अरे भाई ! सुनो तो..."

सोनू ने कहा, "वो सब हम नहीं जानते , हमको हमारे दोनों दोस्त साथ चाहिए और वापस हमारे पास चाहिए । तुम दोनों रहो यहाँ, हम जाते हैं । "

रोनी ने कहा, "अच्छा ठीक है ।"

सोनू के जाने के बाद रोनी और नीलू साथ बैठ कर झरने को निहारने लगे । दोनों के बीच अब भी काट खाने वाली चुप्पी थी । पत्तों में से गीत बजने लगा ,

"यकीं नहीं है मगर आज भी ये लगता है
मेरी तलाश में शायद बहार आज भी है
किसी नज़र को तेरा इंतज़ार आज भी है
कहाँ हो तुम कि ये दिल बेक़रार आज भी है !!"

असल प्रेम जब होता है, तब दो लोग एक दूसरे के मौन को भी पढ़ लेते हैं । लेकिन जब एक दूसरे से दूर भाग रहे प्रेमी साथ खौफ़नाक चुप्पी बाँट रहे होते हैं तब ऐसा लगता है जैसे किसी ने अपनी सबसे पसंदीदा किताब बेच दी हो । इन दोनों ने एक दूसरे के मौन को पढ़ कर, ये किताब जैसे बेच दिया था, न जाने किसको ?

काला पेड़

रोहित गरूड़ नींद में था और नहीं भी । सपनों के अनेक परतों में से एक घटना हर बार उसे उस पुराने समय में ले जाती रही है । रोहित हर बार वहाँ अटक सा जाता था और वापस आने पर बेहद बेचैनी महसूस होती थी । रोहित शांति की तलाश में आविष्कार पर्वत पर अनुराग पेड़ के नीचे ध्यान करने निकल पड़ा । रास्ते में उसे एक उतकु नाम के चींटे ने चिल्ला कर कहा कि शान्ति तुम्हें कभी नहीं मिलेगी । रोहित को ये आवाज़ सुनी हुई लग रही थी और उसने नीचे उतर कर ढूँढना चाहा तो वो कहीं नहीं दिखा । ये घटना शायद उसके सपने भी बहुत बार हो चुकी थी । उसको अब सपने और हक़ीक़त में संदेह होने लगा । तो उसने पास से गुज़रते एक सियार से बुला कर उसका नाम पूछा । सियार ने बताया कि उसका नाम अंकितेश है । फिर उतकु चींटे के बारे में पूछने पर उसने बताया कि ये शांति की तालाश में निकले हर किसी को एक बार ये उतकु चींटा दिख ही जाता है । रोहित वहाँ से उड़ कर अनुराग पेड़ पर पहुँच गया । वहाँ पहुँचते ही एक गोपू नाम के साधु प्रकट हुए । गोपू ने कहा , ' बोलो बच्चा ! क्या समस्या है जीवन में '

रोहित चुप रहा । उसे यक़ीन ही नहीं आ रहा था कि इस दुनिया में कोई ऐसा भी हो सकता था जो तकलीफ़ सुन कर हल कर दे । साधु ने फिर कहा , 'हल किसी और के पास नहीं ! सब तुम्हारे पास है । तुम्हे क्या परेशान कर रहा है ,अपनी कहानी सुनाओ । '

रोहित ने बोलना शुरू किया, 'लाल पेड़ और काला पेड़ , दोनों को इस जंगल के संतुलन के लिए ही प्रकृति ने बनाया था । लेकिन काले पेड़ में पूरे जंगल को अपनी जड़ों में बसा लेने की महत्वकांक्षा पनपने लगी । और इसी ने शुरुआती जंग को हवा दिया । लाल पेड़ ने अपनी क्षमताओं का प्रयोग कर जंग को टाले रखा । लेकिन जब उस हैवान विमली को मारने के लिए लाल पेड़ ने सही समय पर मुझे चुना तब मैंने लाल पेड़ के विरुद्ध उस वक़्त मासूम से दिखते विमली को लाल पेड़ पर शिक्षा देने का फैसला किया । ये भूल थी । उसकी बुराई को नज़रंदाज़ करना , बहुत बड़ी भूल थी । फिर काले पेड़ का मोहरा बना विमली जब हमारे ख़िलाफ़ ही खड़ा हुआ तो उसको हराने के लिए काले पेड़ को जलाना पड़ा और जिसमें जल गए चींटे, ढ़ेर सारे पक्षी , जानवर और शायद विमली को प्रेम करने वाली चील । क्या मैं इस पाप से पीछा छुड़वा पाऊंगा ?"

ये कहते हुए वो नींद में जाने लगा, बस उसे साधु की आवाज़ सुनाई दे रही थी ।

साधु की आवाज़ आ रही थी, "तुम्हें वर्तमान को बचा लेना है । जंग को टालने की कोशिश हर समय करनी है और जंगल के शांति में ही तुम्हारे मन की शांति निहित है । अभी एक छात्रा मुसीबत में आएगी , जाओ उसको बचा लो । काले पेड़ में अब तुम्हें जाना ही होगा । पुरानी यादों के साये से डर कर आज को बंदी बने मत रहने देना । जाओ । जाओ जाओ ।"

नींद खुली तो चोंच के ऊपर अमित नाम का चींटा चल रहा था । वो चिल्ला कर कह रहा था कि जग जाओ रक्षासचिव । रोहित ने नींद से उठते हुए पूछा , "क्या तुम वही चींटा हो , जिसने इतना परेशान कर रखा था ?"

अमित ने कहा , "उसका नाम उतकु है । वो मेरा भाई है , अगर उस एक छात्रा को बचा लोगे तो शायद , वो कभी परेशान नहीं करेगा । "

रोहित ने चारों ओर देखते हुए पूछा , "ये कौन सी जगह है ?"

अमित ने कहा, "तुम सपने और असल दुनिया के बीच कहीं हो । अब देर नहीं करना चाहिए तुम्हें । बस जाग जाओ ।"

लतीफ़ा

सोनू तोता ने रोनी को भागता देख पूछा, "इतनी जल्दी क्यों जा रहे हो ?"

रोनी मोर ने कहा, "आज मिर्ज़ा उल्लू पेड़ के दक्षिणी हिस्से में उपचार विधि की शिक्षा देंगे । और समय पर पहुँचना मुश्किल होगा इसीलिए हमें अभी ही निकलना चाहिए । "

नीलू , सोनू और रोनी एक साथ कक्षा में बैठ गए और मिर्ज़ा उल्लू के आने का इंतेज़ार करने लग गए । मिर्ज़ा उल्लू आये और आते ही उन्होंने एक शीशे के बरतन में मिट्टी डाल कर सबके सामने रख दिया । फिर उन्होंने कहा, "आज हमसब दर्शी दलदाल के विषय में जानेंगे । क्योंकि इस दलदल की मिट्टी से बहुत सारे उपचार संभव हो जाते हैं । क्या यहाँ रोनी मोर उपस्थित है ?"

रोनी ने हाँ में उत्तर दिया तो उन्होंने फिर कहा, "आपलोगों को पता होगा कि पिछले महीने रोनी पर हुए हमले में किसी भी पक्षी का बचना संभव नहीं था । लेकिन रोनी मोर दर्शी दलदल के बहुत नजदीक रहता था और इसीलिए इसके शरीर के घाव बहुत जल्दी भरते हैं । दर्शी दलदल में बहुत सारे गुण होने के बाद भी हम इसकी मिट्टी का बहुत अधिक इस्तेमाल नहीं कर सकते हैं । क्योंकि इसमें दवा के साथ साथ ज़हर भी है , जिससे रोगी को हानि हो सकती है । इसीलिए आपातकालीन स्थिति में ही ये दिया जा सकता है ।"

मिर्ज़ा ने दो घूँट पानी पिया और फिर कहा, "बहुत साल पहले इसी लाल पेड़ की एक बेहतरीन छात्रा थी जिसका नाम राधिका उल्लू था । उसने इस मिट्टी से कुछ हद तक ज़हर को अलग करने का काम किया था । लेकिन फिर इसके बाद वो चली गयी और ये काम अधूरा ही रह गया ।"

अनमोल कबूतर ने खड़े होकर पूछा, "महाशय , मैंने सुना है कि आप और राधिका उल्लू एक दूसरे से प्यार करते थे ? फिर वो चली गईं ?"

मिर्ज़ा ने मुस्कुराते हुए कहा, "हाँ हम दोनों एक दूसरे से प्यार करते थे । लेकिन मुझे इस लाल पेड़ के लिए काम करना था इसीलिए यही रहना था और उसे दुनिया को जानने की लालसा थी इसीलिए वो चली गयी ।"

नीलू ने अब पूछा , "आपने उन्हें जाने दिया । क्या जाने देना भी प्रेम ही है ?"

मिर्ज़ा ने कहा, "ये बेहद बकवास बात है ।"

मिर्ज़ा ने थोड़ा सोचते हुए कहा, "इश्क़ कोई जेल नहीं है । आज़ादी के बिना प्यार का कोई मतलब नहीं । आपको किसी चीज़ को जाने से रोकना चाहिए तो वो है अपने दिल में प्यार और प्यार करने का हुनर । प्रेम जीवन का आधार हो सकता है लेकिन उद्देश्य नहीं । "

सोनू ने पूछा, "तो क्या होना चाहिए उद्देश्य ?"

मिर्ज़ा ने जवाब दिया, "दूसरे के लिए जीना ही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए ।"

रोनी ने अब पूछा, "क्या आपको दुख नहीं होता और उनसे नफ़रत नहीं होती ?"

मिर्ज़ा ने कहा, "उसकी दुनिया मेरी दुनिया से अलग है लेकिन प्यार हम दोनों की दुनिया में है और वहाँ नफ़रत के लिए कोई जगह नहीं है । नफ़रत अंदर रहने से ये आपके व्यक्तित्व को सड़ा देगा । अच्छा एक कहानी सुनाता हूँ । "

मिर्ज़ा ने साँस लेकर फिर बोलना शुरू किया, "दर्शी दलदल बहुत पहले एक सुंदर झील हुआ करती थी । लेकिन एक ऐसा भी वक़्त आया जब काले पेड़ की शक्ति बढ़ने लगी और जंगल पर ये बुरा प्रभाव डालने लगा । दर्शी झील का लाल पेड़ से दूर होने के कारण वहाँ सुरक्षा इंतेज़ाम करवा पाना संभव नहीं था इसीलिए उसपे काले पेड़ का प्रकोप पड़ा और वो सूखने लगी। काले पेड़ के जल जाने के बाद दर्शी झील पर उसका असर खत्म तो हो गया लेकिन तब तक वो एक दलदल में बदल गयी थी । झील की अच्छाइयों के कारण ही ये अब इतनी चमत्कारी दलदल में बदल गयी है ।"

अब रोनी के पास आने के बाद मिर्ज़ा ने कहा, "इसीलिए नफ़रत को निकाल बाहर करो और देखो प्यार करने के लिए दुनिया खूबसूरत है ।"

सोनू ने पूछा , "अगर कोई आपको दुख दे तो कैसे उससे प्यार करते रह सकते हैं ?"

मिर्ज़ा ने कहा , "मैंने अपने दिल में प्यार ज़िंदा रखने को कहा है ।अगर किसी रिश्ते में ज़हर अधिक है तो आपको अपने प्यार को बचा के निकल जाना चाहिए । और अब कोई सवाल नहीं । आज बहुत सारा वक़्त बातों में चला गया इसीलिए अगले हफ्ते दो कक्षा होगी । आप सभी अब जा सकते हैं । "

रात में रोनी मोर , सोनू तोता और नीलू मैना को लेकर तालाब के पास गया । वहाँ पहले से बेचू कौवा और शालू कोयल मौजूद थे । रोनी , सोनू और नीलू पेड़ की डाल पर छिप कर दोनों की बातें सुनने लगे ।

बेचू ने चिल्लाते हुए शालू से कहा , "तुम बदजात हो । अपनी सूरत का इतना घमंड क्यों है तुम्हे । उस मोर के साथ घूम के भी तुम्हे कुछ नहीं मिलेगा । इसीलिए मेरे साथ ही रहो ।"

शालू ने रोते हुए कहा, "लेकिन मैं तुमसे प्यार करने लगी थी । अच्छा छोड़ो अब इन बातों का कोई मतलब नहीं । तुम्हे जाना चाहिए ।"

बेचू कौवा ने पंजे से शालू की चोंच को दबा कर कहा, "मैं चला जाऊँ और फिर तुम उस रोनी को बुला लो ।"

बेचू कुछ और कहता इससे पहले नीलू, रोनी और सोनू वहाँ आ गए । नीलू ने कहा, "बस बहुत हो गया । अब चले जाओ नहीं तो पीट जाओगे ।"

बेचू शालू को छोड़ कर अब नीलू की तरफ तेज़ी से आने लगा तो सोनू ने अपने नए बनाये कृत्रिम पंख से बेचू के मुँह पर मार दिया । बेचू को चोट लगी और वो गुस्से में वहाँ से चला गया । बाकी सब हँसने लगे लेकिन शालू को रोते देख सब शांत हो गए ।

रोनी शालू के पास गया और उसने पूछा , "उसके जैसे घटिया पक्षी के लिए क्यों रो रही हो ?"

शालू कुछ बोलती इससे पहले मीठी गौरैया वहाँ आ गयी ।

मीठी गौरैया ने कहा, "जिसके पास इतने सारे दोस्त हो उसे इतने दर्द में नहीं रहना चाहिए । चलो अब मुस्कुरा दो।"

सोनू ने पंखों को साफ करते हुए कहा, "ये संज़ीदा बातें कर के तुम सब माहौल खराब कर रहे हो ! अच्छा शालू ये बताओ विमली शिकारी ने अब तक शादी क्यों नहीं की ?"

शालू जब कुछ नहीं बोल पाई तो सोनू ने कहा, "क्योंकि इतने सालों से वो ये सुलझाने में लगा है की अगर उसके बच्चे हुए तो अंडे से निकलेंगे या पेट से ।"

शालू ने हँसते हुए कहा,
"मेरे सनम हुए बेईमान कि इश्क़ को लतीफ़ा बना दिया
जब हम रोने लगे तो दोस्तो ने फिर लतीफ़ा सुना दिया"

फिर रोनी ने कहा, "अच्छा आज मैं एक गाना सुनाता हूँ...!"
"ज़िन्दगी क्या हैं इक लतीफ़ा हैं
ज़िन्दगी क्या हैं इक लतीफ़ा हैं
जीने का बस यही तरीका हैं"
सब साथ गाने लगे और साथ नाचते हुए प्रिंसी तालाब को और खूबसूरत बनाने लगे ।

प्रेम के माया से निकल पाना आसान नहीं है और कोशिश भाग जाने की करनी भी नहीं चाहिए । अच्छे पलों को समेट कर आगे अपने हिस्से का प्रेम बचा लें यही बहुत है । अगर रिश्ते ज़हर बन जाएं तब आपकी मदद इस संसार में दो चीज़ें ही कर सकती हैं - दोस्ती और दोस्तों के लतीफ़े ।

मीठी

"ज़िन्दगी क्या है इक लतीफ़ा है
ज़िन्दगी क्या है इक लतीफ़ा है
जीने का बस यही तरीका है "

इस गीत के साथ रात और खूबसूरत होती जा रही थी । बीच में जब सब आराम करने बैठे तो मीठी गौरैया ने कहा, "मैं यहाँ तुम सबको ये कहने आयी थी कि रोहित गरूड़ यहाँ नहीं हैं और हम सबको इतनी देर तक बाहर नहीं रहना चाहिए ।"

सब निकलने वाले थे कि एक विस्फोटक आ कर प्रिंसी तालाब के पास गिरा और सब गिर पड़े । बेचू कौवा आकर वीसी पत्थर पर बैठ गया और उसके आगे आकर चंगू-मंगू चील बैठ गए ।
चंगू ने हँसते हुए कहा, "चलो बच्चों ,पार्टी खत्म ! मेरे दोस्त बेचू को वो जो बदजात कोयल चाहिए, वो दे दो और अपनी जान बचा लो ।"

सोनू तोता ने कहा, "डर के भाग जाने के बाद इतनी बड़ी बड़ी बात कहने के लिए दिमाग इज़ाज़त कैसे दे देता है । वैसे लाल पेड़ पर रहते तो थोड़ी सी अक्ल रहती ।"

मंगू ने चिढ़ते हुए कहा, "तुम्हारे माँ बाप तो विमली सरकार के डर से छुपे रहते हैं और तुम फड़फड़ाने लगे । अच्छा है, लाल पेड़ ने ताक़त नहीं दी ,कम से कम हिम्मत तो दी ही है ।"

शालू ने कहा, "बेचू तुम इनके जैसे नहीं हो, छोड़ दो इनका साथ । हम सब तुम्हारी शिकायत नहीं करेंगे ।"

बेचू ने कहा, "हट बदगो बदजात, आज तुम्हें मैं तुम्हारी असली औक़ात बताऊँगा ।"

रोनी ने कहा, "रोज़ नए दोस्त बनाने वालों को हमेशा एक साथ रहने वाले समूह से उलझना नहीं चाहिए । जाओ काले पेड़ पर ही रहना अब ।"

नीलू ने सभी को एक साथ करीब रहने का इशारा दिया और जैसे ही कुछ बोलती इससे पहले चंगू-मंगू चील अलग अलग दिशाओं से उड़ कर हमले के लिए आने लगे । बेचू सीधा शालू की तरफ उड़ा तो नीलू और मीठी , शालू के साथ आ गए । रोनी और सोनू चंगू-मंगू के लिए तैयार हो रहे थे। सोनू ने पास में रखे अपने कृत्रिम चोंच और पंख लगा लिया और तेज़ी से मंगू की ओर उड़ा । चंगू के पास आते ही रोनी ने चोंच खोला और ध्वनि तरंगे निकालनी शुरू कर दी जिससे चंगू आसमान से गिर पड़ा । उधर हवा में सोनू तोता ने मंगू के नीचे उड़ते हुए उसके पेट पर चोंच से नोंच दिया जिससे मंगू भी हड़बड़ा कर नीचे गिर गया । बेचू कौवा के पास जाते ही नीलू ने उसके दाएं पंख को मोड़ कर उल्टी दिशा में कर दिया और फिर मीठी गौरैया ने उसके बाई आँख में चोंच मार दी । बेचू दोनों से पंख छुड़वाकर दूर हट गया । फिर चंगू-मंगू दोनोंं गुस्से में आकाश में गए और दो विस्फोटकों से रोनी-सोनू पर हमला किया । दोनों घायल होकर गिर पड़े । बेचू कौवा अब मंगू चील के साथ आगे बढ़ा और नीलू को पंजे से मार कर घायल कर दिया । मंगू ने शालू को पंजों से पकड़ लिया और आसमान की ओर उड़ने लगा। बेचू और चंगू से मंगू ने कहा , "तुम दोनों सबको खत्म करके काले पेड़ के पास आ जाना ।

मीठी गौरैया ने विस्फोटक से लगी आग से अपने एक तरफ के पंखों में आग लगा ली और हिम्मत से मंगू की तरफ उड़ान भरी और उसी के पेट से चिपके एक विस्फोटक में आग लगा दी । मंगू ने हड़बड़ा कर शालू को छोड़ दिया और विस्फोटक को पेट से निकाल कर शालू की तरफ फेकना चाहा लेकिन मीठी ने उसके आँख पर हमला कर दिया । हवा में ही विस्फोट हो गया । मीठी गौरैया और मंगू चील दोनों घायल होकर प्रिंसी तालाब में आ गिरे ।

तब तक अनमोल कबूतर के साथ सोनल चील और मिर्ज़ा उल्लू आ गए थे जिसे देख कर चंगू और बेचू उड़कर भाग गए ।

सबने तालाब से मंगू और मीठी को बाहर निकाला । मंगू बेहोश था और उसकी साँसें चल रही थी । लेकिन मीठी का दाहिना हिस्सा पूरा जल चुका था और मिर्ज़ा उल्लू ने उसे महसूस करके कहा, "मीठी गौरैया अब हमारे बीच नहीं रही ।"

सभी रोने लगे और तभी सोनल ने कहा, "रक्षासचिव को संदेश भिजवा दिया गया है । सभी छात्र उनके आने तक अपने कमरे में जाएंगे । "

सब मीठी को उठा कर लाल पेड़ पर ले गए और मिर्ज़ा उल्लू ने अपने सहायकों से कहा, "सोनू, रोनी, नीलू और मंगू को उपचार के लिए तुरंत चिकित्सा कक्ष ले जाओ और उपचार शुरू करो । मीठी के शरीर को भी वहीं रखना, मैं थोड़ी देर में आता हूँ ।"

सोनल चील और मिर्ज़ा उल्लू ने शिक्षकों की आपात बैठक बुलाई और जहाँ ये निर्णय लिया लगा की मंगू का उपचार करके उसे पिंका आम के पेड़ के पास ले जाया जाए ।

इधर शालू कोयल अकेली दयालु झरने के पास बैठी रो रही थी और मीठी के साथ कभी गाए गाने को गुनगुना रही थी । फिर उस दिन को याद करके रोते हुए गाने लगी ,

"दिए जलते हैं, फूल खिलते हैं
दिए जलते हैं, फूल खिलते हैं
बड़ी मुश्किल से मगर
दुनिया में दोस्त मिलते हैं
दिए जलते हैं
जब जिस वक्त किसी का
यार जुदा होता है
कुछ ना पूछो यारो
दिल का हाल बुरा होता है
जब जिस वक्त किसी का
प्यार जुदा होता है
कुछ ना पूछो यारो
दिल का हाल बुरा होता है
दिल पे यादो के जैसे
तीर चलते हैं हा हा
दिए जलते हैं
फूल खिलते हैं, दीये जलते हैं"

तभी अनमोल कबूतर वहाँ आ गया और उसने कहा,

"शालू , हम मीठी को ज़िंदा कर सकते हैं ।"

शालू ने पूछा, "सच ! कैसे ? "
अनमोल ने कहा, "लेकिन औषधि जहाँ से मिलती है वहाँ कोई हमें जाने नहीं देगा और लाल पेड़ से निकाल दिया जाएगा । "

शालू ने भावुकता में कहा, "मैं कहीं से भी वो औषधि ले आऊँगी । तुम चलो मेरे साथ ।"

अनमोल कबूतर उसे लेकर काले पेड़ की गुफाओं में गया जहाँ बेचू और चंगू ने उसे पकड़ कर पिंजरे में बंद कर दिया ।

चिकित्सा कक्ष में सोनू ने गुस्से में मिर्ज़ा से पूछा, "इस मंगू का इलाज क्यों हो रहा है ? क्या आप सब पागल हो गए हो ?"

मिर्ज़ा ने समझाते हुए कहा, "सभी शिक्षकों का ये मानना है कि ये हमला सुनियोजित था । इनके क्या इरादे थे ये जानने के लिए मंगू को पिंका आम के पेड़ के पास ले जाना होगा । "

सोनू ने पूछा , "वहाँ क्यों ?"

मिर्ज़ा ने कहा, "तुमने कभी सोचा है कि नीलू कभी झूठ क्यों नहीं बोल पाती । क्योंकि ये पिंका पेड़ के पास से आयी है । उस पेड़ के आसपास ले जाने से कोई भी झूठ नहीं बोल सकता । वहाँ इस वक़्त जाने में खतरा तो है लेकिन यही एक उपाय है ।"

सोनू ने कहा, "तब हम भी जायेंगे ।"

मिर्ज़ा ने कहा, "चल लो ! लेकिन रोनी को अभी साथ मत ले जाना । उसे आराम की ज़रूरत है ।"

गुफा में विमली शिकारी ने अनमोल को शाबाशी देते हुए कहा, "मैंने तुम्हे वो तोता लाने को कहा था लेकिन अब जब इस जाल में वो रोहित गरूड़ फंसेगा तो मुझे अलग ही सुख मिलेगा ।"

अनमोल ने पूछा , "रोहित गरूड़ ? लेकिन ये कैसे संभव है, सरकार ?"

विमली ने कहा, "क्योंकि मैंने रोहित गरूड़ को पहले ही संदेश भिजवा दिया है कि ये बदजात हमारे पास है और वो लाल पेड़ जाने से पहले आवेग में यहीं आएगा और फंस जाएगा ।"

विमली हँस ही रहा था कि बिजली की कड़क जैसी आवाज़ हुई जिससे ऐसा लगा जैसे भूकंप आ गया हो और फिर गुफा में रोहित ने बिजली की तेज़ी से घुसते हुए विमली को चोंच से मार कर नीचे गिरा दिया ।
विमली तेज़ी से उठा और अपने डंडे को तीन बार ज़मीन पर पटक दिया । काले पेड़ की सारी शाखाएं बढ़ने लगी और गुफा के सारे द्वार बंद हो गए । फिर विमली ने हंसते हुए कहा, "रोहित तुम मुझे मार डालोगे लेकिन इस कोयल को यहां से लेकर नहीं जा सकते । इसीलिए शांत होकर बैठ जाओ और बात करते हैं । "

पाखंड

रोहित गरूड़ गुस्से में विमली के सामने बैठ गया और फिर विमली ने कहा, "कैसा लग रहा है ? खुद को असहाय महसूस करके ?"

रोहित ने कहा, "पहले भी तुम पर दया आती थी और आज भी आ रही है । ऐसे जीवन को लेकर तुम्हे क्या मिला ? न मिल पाई खुशी, न अच्छी ज़िन्दगी , न मौत , न प्यार , न दोस्त और ताक़त मिली भी तो इतनी नहीं कि मुझसे बिना छल के लड़ सको । लाल पेड़ के आदर्शों पर चलते तो आज तुम्हारे जैसे होनहार छात्र को इतना असहाय नहीं देखना पड़ता ।"

विमली ने कहा, "तुम लोगों ने झूठे आदर्श और प्यार के ताक़त की झूठी कहानी रची है । जब नीतू और मंगल तोता के प्रेम को जीत दिलानी थी तो पेड़ के नियम बदल दिए गए , उन दोनों को तुमने ही पेड़ के दीवार की कुंजी दी थी और नियम के हिसाब से उनका कोई वंशज वहाँ नहीं पढ़ सकता था लेकिन देखो वो सोनू तोता वहाँ पढ़ रहा है । और मेरा क्या , मेरी अनु चील का क्या ? हमारे प्रेम पर तरस नहीं आया तुम्हे । कैसे आता ? मेरी जीत से तुम्हारी ताक़त उस पेड़ पर घट जाती । मैंने उस पेड़ पर नए बदलाव लाने की कोशिश की थी जो तुम्हे नहीं पसंद थे और इसीलिए मुझे मारने की कोशिश हुई और उस वक़्त मुझे काले पेड़ ने आसरा दिया जिसे तुमलोगों ने जला दिया । मैं अब बस काले पेड़ की सारी ताक़त को वापस लाऊंगा और मुस्कानवन को बदल दूँगा ।"

रोहित ने कहा, "तुम्हारा प्रेम भी बस तुम्हारी बाकी की महत्वकांक्षा जैसी ही थी इसीलिए लाल पेड़ ने कभी समर्थन नहीं किया। लाल पेड़ ने जंगल में बराबरी रखने की कोशिश की है , यहाँ अच्छाई को बढ़ावा दिया है, संतुलन बनाया है और तुम्हारे जैसे बुरी ताक़तों से बचाया है इस जंगल को ।"

विमली ने हसते हुए कहा, "सब पाखंड है ! जो ताक़तवर है उसी को जीने का हक़ है , जो बच गए उनको या तो मर जाना चाहिए या हमारी गुलामी करनी चाहिए । बदजातों को तुम लोगों ने ही बढ़ावा दे रखा है । अच्छाई और बुराई की बात कमज़ोर लोग करते हैं । तुम लोगों ने इतिहास तक बदल दिया । लाल पेड़ भी जंग से खड़ी हुई है और उस जंग में शहादत किसने दी , हमारे जैसे लोगो ने और आज भी दे रहे हैं । लेकिन पेड़ पर पढ़ने , रहने का अधिकार सबको दे रखा है , क्यों ? काले पेड़ का राज़ आते ही ये बराबरी और प्रेम का पाखंड खत्म होगा । और एक दिन हम इंसानों पर भी राज़ करेंगे । "

रोहित ने विमली को कहा, "कुछ को ताक़त देने के नाम पर हज़ारों को मौत के मुँह में झोंक देना वो भी सिर्फ खुद की महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए , ये है पाखंड ! लाल पेड़ के होने में हर किसी का योगदान है और जिन्होंने भी कुर्बानी दी थी उन्होंने खुद को कुर्बान किया अपने दोस्तों के लिए, प्यार के लिए, जंगल में सभी के लिए । लेकिन ये बात तुम नहीं समझ पाओगे । लाल पेड़ पर कोई एक राज कर ही नहीं सकता क्योंकि वहाँ सबका राज है । और इंसान का शरीर अपना लेने से भी तुम इंसान जितने कपटी नहीं हो पाओगे, तो उनपर राज करना तो भूल ही जाओ । एक बात याद रखो, ताक़त के साथ लालच किसी को भी नीच बना सकती है और ताक़त के साथ विनम्रता किसी को भी महान ! और तुम महान बन सकते थे । "

रोहित कुछ और बोलता इससे पहले चंगू चील ने छिप कर गोली चला दी और रोहित वहीं बेहोश हो गया । विमली गुस्से से पैर पटकने लगा और चंगू को मार ही देता क्योंकि रोहित को वो खुद ही मारना चाहता था लेकिन इससे पहले चंगू ने कहा, "सरकार इसे यही छोड़ दीजिए और अब लाल पेड़ पर हमारी योजना का अंतिम चरण सफल करने का समय आ गया है । "

विमली ने कुछ सोचकर अब अनमोल को बुलाते हुए कहा, "रोहित को बाँध दिया जाएगा और तुम यही रहोगे । और हम लाल पेड़ को पहले बर्बाद करेंगे और फिर इस घमंडी रोहित को खुद अपने हाथों से मारेंगे ।"

अनमोल ने हाँ में सर हिलाया और फिर चंगू चील के साथ काले पेड़ की सेना लाल पेड़ की तरफ उड़ी । विमली शिकारी ने काले पेड़ के तहखाने में कुछ सहेज कर रख दिया और फिर

अपनी उड़नतश्तरी पर बैठ कर लाल पेड़ की ओर उड़ चला ।

उधर पिंका पेड़ के पास नीलू मैना, मिर्ज़ा उल्लू , सोनल चील , सोनू तोता और कुछ सहायक दल , मंगू चील के साथ पहुँच गए थे । मंगू ने पूछने पर योजना बताते हुए कहा, "तुम गधों को क्या लगा था, तुमने मुझे पकड़ लिया तो योजना सफल नहीं हो पाएगी । अनमोल ने शालू कोयल को रात में ही पकड़ लिया होगा और काले पेड़ पर ले गया होगा और वहाँ उसे बचाने गए रोहित गरूड़ भी बंदी बन गए होंगे । यहाँ तुम लोग मुझसे राज निकलवाने आये हो , लेकिन वहाँ तुम्हारे दोस्त, रक्षासचिव और यहाँ तक की लाल पेड़ अब खतरे में है । "

ये कह कर वो हँसने लगा तो सोनल चील ने सोनू से पूछा, "शालू कहाँ है ?"

सोनू ने घबराते हुए जवाब दिया, "वो सुबह से नहीं दिखी । और यहाँ आने की जल्दबाजी में हमने उसे ढूँढने की कोशिश भी नहीं की ।"

सोनल ने कहा, "लाल पेड़ खतरे में है । हमें जल्द ही जाना होगा ।"

काले पेड़ पर रोहित को होश में आते ही अनमोल कबूतर ने बंदूक की नली उसके तरफ कर दी और घबराते हुए कहा, "आप ज़रा भी हिलने की कोशिश मत करना, नहीं तो मारे जाएंगे ।"

रोहित ने प्यार से अनमोल को कहा, "बच्चे , मुझे पता है कि विमली ने तुम्हारे पूरे परिवार को बंदी बना रखा है और मैं उन्हें आज़ाद करवा दूँगा । बस पहले तुम मेरी मदद करो ।"

अनमोल रोने लगा और बंदूक उसके हाथ से छूट गयी । फिर उसने रोहित और शालू के बंधन को खोल दिया और रोहित के गोली को निकाल कर दर्शी दलदल का लेप लगा दिया । अनमोल , रोहित और शालू ने साथ मिल कर अनमोल के परिवार को काले पेड़ की गुफाओं में ढूँढना शुरू किया ।

विमली शिकारी और सेना शिवम पर्वत पर पहुँच गयी और फिर विमली ने चंगू से कहा, "यही समय है अपने भाई के हमले का बदला लेने का । जाओ "

चंगू उड़ कर दयालु झरने के पास वाले हिस्से पर पहुँच गया , जहाँ रोनी अपने दोस्तों के इंतेज़ार में बैठा था ।
चंगू ने रोनी को अकेला देखते ही उसके गले के पास अपने पंजे ले जा कर कहा, " शालू हमारे पास है । उस सोनू तोते से कहो कि पेड़ की कुँजी से दीवार हटा दे, नहीं तो तुम्हारी दोस्त ज़िंदा नहीं रहेगी ।"

रोनी ने घबराते हुए कहा, "कहाँ है शालू ? और सोनू को कुंजी के बारे में कुछ नहीं पता ।"

चंगू ने शालू के पंख का एक टुकड़ा दिखाते हुए कहा, "शालू काले पेड़ पर बंदी है । अगर आज ये काम नहीं होता तो उसे हम चबा ही जाते । सोनू तोता , मंगल-नीतू तोता का वंशज है और उसको ये पेड़ कुंजी दे देगी । तहखाने में है कुंजी ऐसा सरकार ने कहा है इसीलिए ले चलो वहाँ "

रोनी ने कहा, "शालू को कुछ मत करना । लेकिन सोनू यहाँ नहीं है वो पिंका पेड़ के पास गया है । "

चंगू ने कहा, "फिर तुम ही मुझे तहखाने में ले चलोगे और जब तक सोनू नहीं आ जाता तब तक तुम ही कुँजी के लिए अपने लाल पेड़ से प्रार्थना करोगे। "

रोनी चंगू के साथ तहखाने में पहुँच गया और वहाँ पहुँच कर रोनी ने बहुत बार कहा की वो इस कुँजी को नहीं ढूँढ सकता । फिर चंगू ने अपने मन के आवाज़ से ही विमली से बात करनी शुरू कर दी । चंगू ने विमली को जब पूरी बात बताई तो विमली ने चंगू से कहा, "लाल पेड़ अपने लोगों को मरने नहीं देगा । इसके गले में पंजा रख कर पेड़ को धमकी दो ।"

चंगू ने रोनी को विमली वाली बात बता कर पंजे को उसके गले पर रख दिया । फिर रोनी ने पूछा , "तुमने विमली से बात कैसे की ?

चंगू ने हँसते हुए कहा, "विमली सरकार की आत्मा के बहुत हिस्से हैं और मैं उनमें से एक हूँ तो समझ लो कि तुम्हारा सौभाग्य है कि तुम्हारी बात आज विमली शिकारी से ही हो रही ।"

फिर चिल्लाते हुए चंगू ने कहा, "लाल पेड़ को तुम्हारे जैसे कमज़ोर लोगो की कितनी चिंता है आज मालूम हो जाएगा । मैं 7 तक की गिनती करूँगा और फिर तुम्हे मार दूँगा ।"

फिर गिनती करने लगा और फिर जैसे ही 5 तक पहुँचा वैसे ही रोनी मोर का जला हुआ पंख उड़ते हुए रोनी के पंजों पर आ गिरा । चील ने जैसे ही वो पंख उठने के लिए पंजों को आगे बढ़ाया वैसे ही बिजली के एक झटके से उसका पंजा जल कर अलग हो गया ।
उसने कहारते हुए जब विमली को बात बताई तो उसने कहा, "रोनी को बोलो कि वो पंख ही कुँजी है और उसे उठा कर पेड़ की अदृश्य दीवार गिरा दे । क्योंकि तुम वो कुँजी नहीं छू पाओगे । रोनी शालू के लिए ये ज़रूर करेगा ।"

चंगू ने रोनी को कहा, "ये पंख उठाओ और बस लाल पेड़ के कवच बने दीवार को मिटा दो । नहीं तो शालू को हमारे सरकार मार डालेंगे ।"

रोनी ने जैसे ही पंख उठाया वो एक सुंदर कुँजी में बदल गयी और पूरा तहखाना बदल गया मुस्कानवन की ही एक सूक्ष्म छवि में । रोनी को अब लाल पेड़ की अदृश्य दीवार भी दिख रही थी और उसने कुँजी का इस्तेमाल से वो दीवार हटा दी ।

चंगू चील के कहने पर विमली शिकारी शिवम पर्वत से लाल पेड़ की ओर उड़ा ।

'वो है न ' इसी उम्मीद पर दुनिया टिकी है । किसी के होने की उम्मीद । कुछ लोग दोस्तों के लिए किसी भी हद से गुज़र जाने को तैयार होते हैं और कुछ ताक़त पाने के लिए । ग़लत चीज़ों को सुंदर शब्दों के आवरण में लपेट कर रखना ही पाखंड है । इस कहानी में दूसरों को दबा कर रखने वाला ताक़त हासिल करना था , प्रेम और जंगल बचाने के नाम पर ।

स्वघोषित ईश्वर

काले पेड़ की गुफाओं में अनमोल कबूतर , रोहित गरूड़ और शालू कोयल ने मिल कर कबूतर के पूरे समूह को ढूँढ लिया । फिर अनमोल कबूतर ने अपने पूरे परिवार से रोहित को मिलाया और फिर विमली से जंग में पूरे समूह के सहयोग का वादा भी किया । फिर रोहित का धन्यवाद करते हुए अनमोल ने कहा, "आपने हम सबको डर से आज़ादी दी है और अब ये ज़िन्दगी आपकी अमानत है । "

रोहित ने कहा , "इसकी ज़रूरत नहीं है । हमें अब जल्द ही लाल पेड़ की तरफ उड़ना चाहिए । "

अनमोल ने कहा, "थोड़ी देर इंतेज़ार कीजिए महाशय । मुझे इस पेड़ से एक विशेष हथियार चाहिए, जिससे इस युद्ध में बहुत मदद मिल सकती है ।"

शालू ने अनमोल के जाते ही रोहित से कहा , "मेरे साथ जो इस कबूतर ने किया उसके लिए माफ करना बहुत मुश्किल और यकीन करना तो असंभव ही होगा ।"

रोहित ने कहा, "अनमोल बहुत शुरुआत से सोनू को बचाता ही आ रहा है । सोनू की रक्षा करना बेहद ज़रूरी था । सोनू को इसने अपने कमज़ोर जाल में फँसाया और इसीलिए वो लाल पेड़ से अधिक दूर विमली के जाल में फँसने नहीं जा पाया । दूसरी बार जब सोनू और नीलू अंधेरे में घूम रहे थे तो इसने ही धागा बाँध कर उनका रास्ता बदल देने को मजबूर कर दिया था, नहीं तो उस दिन सोनू का चंगू ने अपहरण कर ही लिया होता । और तीसरी बार जब चंगू-मंगू सोनू को लेने आये थे तब इसने ही उसे डाल मार कर गिरा दिया था और

इसीलिए सोनू की जगह रोनी उस दिन फँस गया और घायल हो गया । अनमोल ने काले पेड़ के गुप्तचर होते हुए भी तुम लोगों की मदद ही की है।"

शालू ने फिर पूछा, "लेकिन सोनू इतना महत्वपूर्ण क्यों था ?"

रोहित ने कहा, "विमली के लिए सोनू एक हथियार जैसा था । बिना लड़े लाल पेड़ जीतने का हथियार । क्योंकि वो जानता था कि सोनू के माता-पिता यानी कि नीतू-मंगल तोता लाल पेड़ के कुँजी के रहस्य को जानते हैं और उन्होंने ने ही पेड़ की दीवार के मन पढ़ने की शक्ति खत्म की थी और वो इनके बेटे की जान के बदले उनसे ये दीवार हटाने को कहता । मुझे आधी बात मालूम हो रही थी और अनमोल की हरकतों पर नज़र होते हुए भी मैंने कुछ इसीलिए नहीं कहा क्योंकि मैं ये देखना चाहता था कि ये आखिर चाहता क्या है ।"

शालू ने सोचते हुए कहा, "फिर भी मुझे यहाँ धोखे से फँसा देना तो मेरी समझ के बाहर है । "

रोहित कुछ बोल पाता इससे पहले ही अनमोल के पंखों में रखी एक बोतल से आवाज़ आयी , "इसने दोस्ती के लिए ये किया । मैं समझाती हूँ ।"

शालू और रोहित कुछ बोल पाते इससे पहले ही अनमोल ने उन्हें बस कुछ पल के लिए इस बोतल की आवाज़ सुन लेने का अनुरोध किया ।

बोतल से आवाज़ आयी, "मेरा नाम अनु चील है । मैंने कभी विमली से सच्चा प्रेम किया था और उसकी महत्वकांक्षा को जानते हुए भी करती रही । उसने मुझे अपनी योजना के नमूने के तौर पर इस्तेमाल किया । उसे लाल पेड़ से बाहर निकलने के लिए कुँजी चाहिए थी और उसके लिए उसने मुझसे प्रेम का झूठा ढोंग किया लेकिन लाल पेड़ ने जब उसकी योजना विफल कर दी तब इसने मुझे प्यार के माया में फँसा कर इस काले पेड़ में कैद कर दिया । इसके लिए मैं जान दे सकती थी और इतने के बाद भी इसके एक बार के प्रेम के लिए तरसती रही । उसको अमर होने के लिए अपनी आत्मा को तोड़ कर हिस्सों में बाँट देना पड़ता और इसने मेरे शरीर को प्रशिक्षण के तौर पर इस्तेमाल किया और मेरी आत्मा को इस बोतल में बंद कर दिया । अब वो अमर है और मैं एक बंद रूह हूँ । मुझे तुम्हारी मदद चाहिए शालू। मेरी रूह की मुक्ति का एकमात्र उपाय ये है कि मैं अपनी रूह को उसके ताकत के साथ किसी ऐसे जीव को दान दे दूँ जिसका मन साफ हो । और अनमोल ने सोनू से ध्यान भटकाने के लिए तुम्हारी सूचना विमली को दी और तुम्हे इसीलिए चुना क्योंकि इसके हिसाब से तुम्हारे से ज्यादा साफ मन उस पेड़ पर किसी का नहीं है ।"

शालू ने डर और हैरानी से रोहित की तरफ देखा तो रोहित ने कहा, "घबराओ नहीं , इससे तुम्हे कोई परेशानी नहीं होगी ।"

फिर अनु चील ने कहा, "लेकिन एक बात और है जो अनमोल ने मुझे बताई है । तुमने किसी के प्रेम के लिए अपने आत्मसम्मान तक को मार दिया है । तुमको अगर आगे भी यूँ ही रहना है तो मुझे यहीं छोड़ दो । क्योंकि आत्मसम्मान के बिना रहने वाले गुलाम शरीर में जाने से बेहतर है कि मेरी रूह इसी बोतल में क़ैद रहे । प्रेम में अहं के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए लेकिन आत्मसम्मान के बिना प्रेम को जीवन में जगह ही नहीं देनी चाहिए ।"

शालू ने आत्मसम्मान के लिए जीने का वादा किया और फिर बोतल को अपने पंखों से छुआ जिससे बाद एक बिजली की आवाज़ हुई और वो बोतल गायब हो गयी । शालू के घाव भर गए और उसने अपने शरीर में एक अलग ऊर्जा को महसूस किया । फिर रोहित के आदेश पर कबूतर का समूह सहित शालू कोयल लाल पेड़ की ओर उड़ चली ।

सोनल चील के साथ सोनू तोता और उनका समूह लाल पेड़ पर पहुँच गए और जहाँ उन्होंने लाल पेड़ के सभी योद्धा रक्षकों को संगठित किया और फिर सोनल चील ने एक मंत्र कहा, "कवच निर्माण भवन्तु !"

मंत्र कहते ही दयालु झरने का सारा जल एक विशाल दीवार बन कर लाल पेड़ के एक हिस्से को घेर लिया और फिर पवित्र अग्नि ने दूसरे हिस्से को घेर लिया ।

विमली और उसकी सेना ने जैसे ही इस नए कवच के ऊपर से उड़ने की कोशिश की , वैसे ही ये दीवार बढ़ती चली गयी । इसके बाद विमली ने शिवम पर्वत के ऊपर बैठ कर एक चाकू से अपनी सबसे छोटी ऊँगली को काट दिया और फिर उसने ऊँगली से बहते खून को दयालु झरने के पानी की तरफ फेंक दिया । जैसे ही वो खून की बूंदें पानी से बनी दीवार पर गिरी वैसे ही वो झरना सूख सा गया और इस तरह से विमली की सेना को लाल पेड़ पर जाने का रास्ता मिल गया ।

विमली की सेना ने लाल पेड़ पर पहुँचते ही विध्वंश मचाना शुरू कर दिया । एक एक करके सारे रक्षकों को काले पेड़ के सैनिकों ने मारना शुरू कर दिया । रोनी ने जब नीलू को पीटते देखा तब वो तहखाने से निकलने की कोशिश करने लगा तो चंगू ने उसे फिर से शालू की बात याद दिला कर वही रहने को मजबूर कर दिया ।

अब विमली शिकारी ने सोनल चील को अपने पैरों के नीचे रख कर चिल्लाते हुए कहा, "सबसे पहले मेरे प्रिय मंगू चील को आज़ाद कर दो ।"

मंगू के आज़ाद होते ही विमली ने कहा, "तुम सभी को झूठ पढ़ाया गया है । कमज़ोर पक्षियों के द्वारा अपनी सुरक्षा के लिए बनाया गया एक पाखंड की कहानी को आप सभी ने इतिहास माना है । और अब वो इतिहास मेरे कदमों में है । और प्यार की ताक़त और तुम्हारे

रक्षासचिव महान काले पेड़ के बंदी है । अब नए युग का स्वागत करो और इस अच्छाई-बुराई से दिमाग को आज़ाद कर दो । अब वक़्त है की इस युग के भगवान के आगे झुको और काले पेड़ की तरफ आ जाओ । जीवित रहने का यही एकमात्र उपाय है ।"

विमली इसके आगे कुछ बोल पाता की तभी लाल पेड़ पर बिजली कड़की और विमली के छाती पर आँखों में आग लिए रोहित गरूड़ ने पंजों से हमला कर दिया । विमली लाल पेड़ के डाल से नीचे गिरने लगा और सोनल चील उठ के खड़ी हो गयी । रोहित गरूड़ को देखते ही सब पक्षियों के अंदर एक अलग से साहस ने जन्म ले लिया और फिर से दोनों पक्ष अपने अपने हितों के लिए लड़ने लगे । विमली ने नीचे गिरने से पहले ही नीचे वाली डाल पकड़ कर ऊपर की ओर उछला और फिर से रोहित गरूड़ से लड़ने आ गया । उसने उसके घाव पर हमला करना शुरू कर दिया ।

उधर मंगू चील को सोनू तोता और नीलू मैना ने संभाल रखा था । सोनल चील, मिर्ज़ा उल्लू , कबूतरों का समूह और रक्षकों ने एक साथ अब काले पेड़ की सेना से बहादुरी से लड़ने लगे और विमली की सेना अब हारने ही लगी थी ।

बेचू कौवा को कबूतरों के बीच आंधी जैसी तेज़ी से लड़ती शालु कोयल दिख गयी तो उसने उसके पास पहुँच कर शालु से कहा, "ये नया परिवर्तन कहाँ से आ गया है बदगो शिरोमणि । आज तुम्हारे लिए लड़ने वो रोनी नहीं आया । आज तुम्हारी चोंच को तोड़ कर काले पेड़ को आहुति चढ़ाऊँगा ।"

ये कह कर उसने हसते हुए शालु कोयल की तरफ अपना पंजा बढ़ाया । शालु ने उसके पंजे को मोड़ कर उसके गले के पीछे कर दिया और फिर उसके चोंच को पकड़ कर लाल पेड़ में गाड़ते हुए कहा, "आज के बाद शालु के चोंच को छूने का नाम भी लिया तो चोंच इसी तरह गाड़ दूँगी ।"

जब काले पेड़ के सैनिक बेचू को बचाने के लिये शालु को घेरने लगे तो शालु ने पंखों से पाँच सैनिको को नीचे गिरा कर फिर से बेचू के सर पर बैठते हुए चिल्लाई, "लोहितवृक्षस्य जय भवन्तु ।"

शालु को सुरक्षित देख कर रोनी मोर अब तहखाने से निकलने लगा तो चंगू चील ने उस पर हमला कर दिया और अब दोनों एक दूसरे से लड़ने लगे ।

मंगू चील को नीलू मैना और सोनू तोता ने बहुत घायल कर दिया और वो डर कर लाल पेड़ से भाग गया । शालु को चिल्लाते देख विमली का ध्यान उसपर गया और वो समझ गया कि अनु चील ने शालु को अपनी आत्मा का दान दे दिया है । इस बात पर उसने गुस्साते हुए काले पेड़ के पाँच सैनिकों को अपने शरीर में मिला लिया और फिर उसका शरीर बढ़ने लगा । फिर उसने अपनी सारी ताक़त से रोहित गरूड़ के घाव पर हमला कर दिया । रोहित जब

तक संभल पाता उसने उसके सर पर अपने तिलस्मी डंडे से वार किया और रोहित पेड़ से नीचे गिर कर दयालु झरने के बचे हुए पानी में डूब गया ।

अच्छाई और बुराई में बुराई हमेशा आकर्षक ही लगती है । लेकिन क्या अच्छाई हर बार सर पर चोट खाए पानी में गिर जाता है ? इतिहास बताता रहा है कि स्वघोषित ईश्वर को नई पीढ़ी ने हर बार हराया है ।

उम्मीद

रोहित गरूड़ को गिरता देख नीलू मैना, मिर्ज़ा उल्लू और सोनू तोता एक साथ विमली शिकारी की ओर उड़े । सोनल चील चिल्लाते हुए दयालु झरने में गिरे हुए रोहित गरूड़ की ओर उड़ी । इधर लाल पेड़ के रक्षकों का विश्वास डगमगा रहा था और उस मनोबल को थाम रखा था शालु कोयल की ऊर्जा और लड़ने के साहस ने ।

विमली ने गुस्से से शालु की ओर देखा और कहा, "अनु , मैं जानता हूँ कि तुम यहीं हो और मैं अब इस कोयल को मारूँगा , फिर से तुम्हारी आत्मा को क़ैद कर लूँगा ।"

विमली को शालु की तरफ बढ़ता देख नीलू मैना, मिर्ज़ा उल्लू और सोनू ने उसे घेर लिया और फिर एक साथ विमली से लड़ने लगे । विमली ने बाएं हाथ से सोनू के दाएं पंजों को पकड़ के पास के ही पत्तों के झुरमुट में फेंक दिया और फिर मिर्ज़ा उल्लू को अपनी लाठी से मार कर बेहोश कर दिया । नीलू मैना ने लाल पेड़ के ही एक पत्ते का इस्तेमाल कर के विमली की आँखों पर वार किया और उसको घायल कर दिया । जब दूसरी बार उसी तेज़ी से नीलू विमली पर हमला करने आ ही रही थी कि तभी विमली ने अपनी एक ज़ोरदार लात मारी और वो रोहित गरूड़ के पास जा गिरी । जहाँ सोनल चील ने दयालु झरने की मदद से रोहित को बाहर निकाल लिया था । उसने नीलू को भी झरने के किनारे लिटा दिया । इसके बाद उसने दयालु झरने और पवित्र अग्नि से मदद माँगनी शुरू कर दी ।

तहखाने में रोनी को मंगू चील ने बहुत बुरी तरह से घायल कर दिया था ।

रोनी के चोंच को अपने पंजे से दबाते हुए मंगू ने कहा, "तुम्हे हम ज़िंदा रखेंगे और तुम्हारे जले पंख को तुम्हारे दोस्तों के खून में डूबा कर ही लिखी जाएगी लाल पेड़ की तबाही ।"

रोनी को अपने पंख से बने कुँजी का ख़याल आया और फिर उसने कुँजी से मंगू के पेट में हमला कर दिया । ये करते ही मंगू का शरीर जल कर राख हो गया और उससे एक काली परछाई जो किसी गिद्ध जैसी दिख रही थी वो रोनी को गिराते हुए तहखाने से उड़ गयी ।

रोनी ने विमली को लाल पेड़ की छवि में देखा तो उसे महसूस हुआ कि वो कमज़ोर हो चुका था ।
उसे जैसे ही मंगू की बात याद आयी कि विमली की आत्मा का एक हिस्सा मंगू में ही था , उसने वैसे ही पत्तों के झुरमुट में पड़े सोनू को पत्तों के माध्यम से ही कहा , " सोनू , विमली पर पूरी ताक़त से हमला करो अभी । शालु खतरे में है ।"

शालु लड़ते लड़ते अब थकने लगी थी और विमली से बचने की कोशिश कर रही थी । विमली ने पेड़ की टहनी तोड़ कर उससे एक आग जैसा हथियार बना लिया और फिर उसे शालु की ओर फेकने ही वाला था कि सोनू तोता ने अपनी पूरी शक्ति से विमली के आँखों पर हमला कर दिया ।

विमली के कदम लड़खड़ाने लगे । उसी वक़्त आग और पानी से बनता हुआ तूफान दिखा और उस तूफान को अपनी पँखों से नियंत्रित करती दिखी सोनल चील । दयालु झरने और पवित्र अग्नि की शक्ति लिए सोनल चील ने पूरी ताक़त से विमली के नाभि पर हमला कर दिया ।
विमली अब पूरी तरह कमज़ोर पड़ चुका था और सोनल से बनते तूफान से वो डर भी गया था । वो तुरंत ही उड़नतश्तरी पर बैठ गया । जैसे ही वो भागने वाला था वैसे ही रोनी ने कुँजी का इस्तेमाल किया और लाल पेड़ के चारों ओर फिर से मन पढ़ने वाली अदृश्य दीवार बना डाली । विमली की उड़नतश्तरी ज्योंही वो दीवार को पार करने लगी त्योंही उड़नतश्तरी सहित विमली का शरीर राख हो गया । फिर शरीर से एक साया निकाला और शायद काले पेड़ की दिशा की ओर उड़ गया । काले पेड़ के सारे सैनिकों को बंदी बना लिया गया । सोनल चील अब थक कर गिर गयी । सभी एक दूसरे को संभालने लगे । खून और राख से सनी लाल पेड़ की टहनियां आज भयंकर दिखाई दे रही थी । रोहित गरूड़ सहित सभी घायलों को मिर्ज़ा उल्लू ने चिकित्सा कक्ष में उपचार के लिए भेज दिया ।

चंगू चील उड़ कर काले पेड़ के तहखाने में गया । उसने फिर विमली द्वारा छिपा कर रखी गयी एक बोतल निकाली और फिर अपनी खून की एक बूंद उस बोतल पर गिरा दी । एक काली परछाई ने जन्म लिया और फिर विमली के शरीर से निकल कर आ रहे काले साये में मिल गयी । फिर एक विमली जैसी आकृति बनी जिसने चंगू से कहा , " नीले पेड़ के पास एक गुफा है । उस गुफा में रहती है एक चुड़ैल - जिसका नाम वर्षा चुड़ैल है । उसने अविराज नाम के एक गरूड़ के मृत शरीर बचा कर रखा है । तुम्हे वहाँ जाना होगा और फिर इस बोतल से हमारी आत्मा को उस शरीर में प्रवेश करवाना होगा । तुम्हे ही अब काले पेड़ पर मेरी आत्मा को उस शरीर के साथ लाने की ज़िम्मेदारी निभानी होगी । जाओ । काले पेड़ की शक्ति तुम्हारे साथ रहेगी । "

1 महीने के बाद दयालु झरने के पानी के साथ लाल पेड़ की रौनक भी वापस आ गयी थी ।

रोनी मोर दयालु झरने के पास बैठ कर झरने से दूर ढलते सूरज को देख रहा था । तभी नीलू मैना आ गयी और उसने आते ही पूछा , "सोनू और शालु कहाँ हैं ?"

रोनी ने नज़रों को सूरज की ओर ही रखते हुए कहा , "सोनल चील उन्हें युद्ध करने की नई तकनीक सीखा रहीं हैं । वो दोनों उनके साथ ही प्रिंसी तालाब के पास हैं ।"

नीलू ने पूछा , "तुम हमसे अब तक नाराज़ हो ? नज़रों को मिलना भी नहीं चाहते ?"

रोनी ने कहा, "शायद तुमसे नाराज़ होना भी हमारी किस्मत में नहीं है । अब नहीं हैं नाराज़ तुमसे । लेकिन तुमसे जो सवाल थे , वो सवाल आज भी हैं ।"

नीलू ने कहा, "हर कहानी को पूरा कर देना ज़रूरी तो नहीं, शायद कुछ कहानी का अंत होना किसी को भी पसंद न आये । हम आज तुमसे अपने दोस्त को वापस माँगते हैं । लेकिन हमारे पास जवाब आज भी नहीं है ।"

रोनी ने कहा, "जिन चीज़ों को सहेज़ कर नहीं रखा जाए वो खो जाया करती हैं । शायद मेरा प्रेम भी एक दिन खो जाए । और प्रेम के बिना तुम्हारा दोस्त तुम्हे वैसा नहीं मिल सकता । लेकिन
मीठी के हमारे जीवन से जाने के बाद हम वैसे भी पहले जैसे नहीं रह गए हैं । शालु ने प्रेम किया बेचू से, लेकिन उसके लिए खुद को भी त्याग दिया मीठी ने । अगर हम अपनी दोस्त को अपने प्यार के लिए छोड़ दें तो ये मीठी का अपमान होगा । "

नीलू ने कहा, "तुम किसी ऐसे से प्यार करना जो तुम्हे इस तरह ही प्यार कर पाए ।"

रोनी ने कहा, "किसी दोस्त से प्यार हो जाना इस दुनिया के सबसे सुखद संयोग में से है । क्योंकि ऐसी मोहब्बत में जिस्म से पहले रूह का मिलन हो चुका होता है । और ऐसा संयोग सबको नसीब नहीं होता । हमारे दिल में प्यार है और वो हमेशा रहेगा । लाल पेड़ ने हमको प्यार करना सीखाया है और किसी न किसी से प्यार करेंगे ही । बस वो संयोग शायद एक बार ही होना था , सो हो गया ।"

नीलू ने रोते हुए कहा, "बस इतना कहेंगे कि ये तुम्हारी भलाई के लिए ही है । "

रोनी ने कहा, "ये नहीं कहना था नीलू ! हमको खुशी है कि तुम अपने लिए इतना कर रही हो । अगर सबको ये मालूम हो जाए कि सूरज के क्षितिज में डूब जाने के बाद सुबह नहीं होगी तो वो सब रात में जीना सीख लेंगे , भले ही रात पहले कितनी भी भयानक क्यों न लगे । तुम अगर अपने लिए

नहीं , मेरे लिए ये सब कर रही हो तो ये बात हमको एक आशा में बाँध जाएगा और हम तुम्हारे इंतेज़ार में रहेंगे । जैसे अगली सुबह सूरज के आने की उम्मीद में ही हम रात भर चैन से सो जाएंगे और बेहद खूबसूरत सपने देखेंगे ।"
नीलू ने कहा, "कल रोहित गरूड़ सभी को एक महीने की छुट्टी दे रहे हैं । हम अपने घर जा रहे । तुम कहाँ रहोगे ?"

रोनी ने मुस्कुराते हुए कहा , "शायद यहीं, हर शाम दयालु झरने में सूरज को डूबते देखेंगे । "

नीलू ने कहा, "आज कोई गाना नहीं सुनाओगे ?"

रोनी ने हाँ में सर हिलाते हुए गाना शुरू किया,

"वक़्त ने किया क्या हंसीं सितम
तुम रहे न तुम हम रहे न हम
वक़्त ने किया
जाएंगे कहाँ सूझता नहीं
चल पड़े मगर रास्ता नहीं
जाएंगे कहाँ सूझता नहीं
चल पड़े मगर रास्ता नहीं
क्या तलाश है कुछ पता नहीं
बुन रहे हैं दिल ख़्वाब दम-ब-दम
वक़्त ने किया क्या हंसीं सितम
तुम रहे न तुम हम रहे न हम
वक़्त ने किया"

कहानी का अंत कोई लेखक नहीं लिख सकता है । कुछ वक्त के बाद किरदार कहानी लिखने लगते हैं और अगर इस कहानी को प्रेम कहानी मान लें तो प्रेम और प्रेम कहानियों का कोई अंत नहीं है ।